Portfolio : Sunita Bharti (सुनिता भारती) Acting: Theatre

Andha Yug / Dharmveer Bharti (अंधा युग/धर्मवीर भारती) Played Gandharee

1st Show

05 • पटना • रविवार • 28 सितम्बर 2014 हिन्दुस्तान

दोनों पक्ष ने तोड़ी मर्यादा..., कौरव ने ज्यादा

पटना | कार्यालय संवाददाता

टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर चुकी मर्यादा...उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा... पांडव ने कुछ कम, कौरव ने कुछ ज्यादा...जब ये संवाद गूंज रहे थे, तब कालिदास रंगालय में बैठे दर्शकों की खामोशी कुछ और ही कह रही थी। सब एक झटके में नाटक से बंध गए थे।

धर्मवीर भारती लिखित 'अंधा युग' नाटक पहले दृश्य से ही दर्शकों को बांधे रहा। सुमन कुमार के निर्देशन में बिहार आर्ट थियेटर के कलाकारों ने इसे प्रभावी बनाने की अच्छी कोशिश की। सुनीता भारती (गांधारी), विशाल तिवारी (धृतराष्ट्र), इरफान अहमद, डॉ. शंकर सुमन आदि ने बेहतरीन अभिनय किया। प्रदीप गांगुली, विशाल तिवारी और उपेंद्र कुमार ने मंच परे योगदान दिया।

शनिवार को कालिदास रंगालय में अंधा युग नाटक का एक दृश्य। • हिन्दुस्तान

बेहतरीन अभिनय

युद्ध भूमि का धूसर रंग, टूटा हुआ रथ, तीर-धनुष, सब कुछ इस अंदाज में मंच पर दिखा कि हकीकत लगने लगा। शानदार मंच व प्रकाश परिकल्पना का ही जादू था कि दर्शक पहले दृश्य में ही बंध गए। इसके बाद विशाल तिवारी ने धृतराष्ट्र की शानदार भूमिका से दर्शकों को पूरी तरह बांध लिया। महाभारत के 18वें दिन की संध्या से लेकर श्रीकृष्ण की मृत्यु तक की कहानी को जीवंत करने में अन्य कलाकारों ने भी अच्छी भूमिका निभाई। किस तरह पुत्र दुर्योधन की अस्थि-शेष देखकर गांधारी धैर्य खो बैठती है, कैसे कृष्ण को श्राप देती है। और आखिर कैसे बहेलिए के हाथों कृष्ण मारे जाते हैं, इसको प्रभावी तरीके से मंच पर उतारा गया।

A Scene from 1st show of Andha-Yug

प्रभात खबर
www.prabhatkhabar.com

सिटी लाइफ

बिहार आर्ट थियेटर ने किया नाटक का मंचन

नाटक अंधा युग का दृश्य!

कौन बचाये अंधे युग से

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अंधा युग कभी नहीं जा सकता. अंधा युग तब भी था, जब महाभारत युद्ध चल रहा था और आज भी है. गांधारी और धृतराष्ट्र ही तरह आज के जमाने में भी सरकारें अंधी बन कर चल रही हैं. ऐसी ही कुछ बातों को बिहार आर्ट थियेटर रेपेटरी द्वारा गुरुवार को नाटक 'अंधा युग' द्वारा प्रस्तुत किया गया. धर्मवीर भारती द्वारा लिखित इस नाटक को 20वीं सदी का सर्वश्रेष्ठ हिंदी नाटक भी घोषित किया गया. निर्देशक सुमन कुमार ने नाटक को बेहतर दिखाने के लिए सेट पर विशेष ध्यान दिया.

नाटक की शुरुआत दो प्रहरी के बातचीत से शुरू होती है. वे आपस में महाभारत की बातें कर रहे थे. 'यह महायुद्ध के अंतिम दिन की संध्या है. चारों ओर उदासी गहरी छायी है. कौरव के महलों का सूना गलियारा है. घूम रहे केवल दो बूढ़े प्रहरी'. दोनों प्रहरी के संवाद ने दरसा दिया था कि यह कहानी महाभारत के आखिरी दिन की है. इस संवाद के तुरंत बाद ही मंच पर दिख रहे दो प्रहरी ने सूत्रधार बनने का काम किया और नाटक अंधा-युग के बारे में दर्शकों को बताया.

नाटक का मंच सज्जा ही नाटक की कहानी कह रहा था. एक तरफ बैठे गांधारी और धृतराष्ट्र, तो दूसरी तरफ कथा को गायन के रूप में कहनेवाले कलाकार. बिहार आर्ट थियेटर के नये और पुराने स्टूडेंट्स ने मिल कर इस नाटक को पूरा किया. नाटक के निर्देशक वरिष्ठ रंगकर्मी और वरिष्ठ निर्देशक हैं, जिस कारण नाटक में काफी गंभीरता दिखायी दी. मंच से लेकर मंच के पीछे (ग्रीन रूम) तक इसी गंभीरता ने कठिन नाटक को भी हल्का बना दिया.

यह संवाद रहा बेहतरीन

- टुकड़े–टुकड़े हो बिखर चुकी है मर्यादा, उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है. पांडव के कुछ कम, कौरव ने कुछ ज्यादा. यह रक्तचाप अब कब समाप्त होना है. यह अजब युद्ध है~~. नही किसी की~~ भी जय. दोनों पक्षों को खोना ही खोना है. अंधों से शोभित था युग का सिंहासन. दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन. अधिकारों का अंधापन जीत गया. जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था, वह हार गया... द्वापर युग बीत गया.
- अठारह दिनों के इस भीषण संग्राम में, कोई नहीं केवल मैं ही मरा हूं करोड़ों बार. जितनी बार, जो भी सैनिक भूशायी हुआ, कोई नहीं था, वह मैं ही था – कृष्ण

ये कलाकार थे मौजूद

नाटक में लगभग सभी कलाकारों ने बेहतर अदाकारी की. इनमें सुनिता भारती, नंदलाल सिंह, उमंग कुमार, रविशंकर, डॉ शंकर सुमन, मुहम्मद दानिश, सुजीत कुमार शर्मा, नीरज सिंह, मनीष कुमार, अरुण सावली, प्रवीण कुमार, नीरज कुमार, नीतीश कुमार, अलका शर्मा मौजूद थीं. रूप सज्जा में अशोक घोष मौजूद दिखे. नाटक के सहायक निर्देशक रविशंकर थे.

यह है कथा वस्तु

यह नाटक महाभारत के अठारहवें दिन के शाम से लेकर प्रभास क्षेत्र में कृष्ण की मृत्यु तक की कहानी है. प्रतीक-शैली की इस नाटक में धृतराष्ट्र महत्वाकांक्षा और स्वार्थ जैसी अंधी प्रवृतियों के प्रतीक हैं. अंधा-युग हर उस युग की कहानी है, जिसमें इस प्रकार की अंधी प्रवृत्तियां पनपती हैं, और समाज से प्रकाश की लौ लुप्त हो जाती है. आज जहां भी युद्ध होता है, वहां पर सबसे पहले मानवता, मूल्य और मर्यादा ही मरती है. यही महाभारत में भी हुआ था. मर्यादा और नैतिकता को अनसुनी करनेवाले धृतराष्ट्र को पुत्र-शोक की भयानक अग्नि में जलना पड़ता है. विह्वल गांधारी पुत्र दुर्योधन के अस्थि शेष को देख धैर्य और विवेक खो देती है और कृष्ण को इसका उत्तरदायी समझते हुए उन्हें शाप देती है, जिसे कृष्ण स्वीकार भी कर लेते हैं. वे कहते हैं कि चेतन सत्य के प्रतीक हैं, जो सब में मौजूद हैं. यह कहानी एक व्याध के हाथों कृष्ण की मृत्यु के बाद खत्म होती है.

Andha Yug / Dharmveer Bharti (अंधा युग/धर्मवीर भारती) Played Gandharee/Asst. Director (स० निर्देशक)

3rd Show

एक्टिविटी PATNA, THURSDAY, 12/02/2015 2

यह अजब युद्ध है, नहीं किसी की भी जय

DRAMA

डीबी स्टार » पटना

यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा...

इन पंक्तियों से महाभारत युद्ध की विभीषिका को बुधवार को कालिदास रंगालय में दिखाया गया। मौका था यहां डॉ चतुर्भुज की स्मृति में शुरु हुए छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव 2015 के पहले दिन हुए नाटक अंधा युग के मंचन का। नाट्योत्सव का आयोजन मगध कलाकार और कला जागरण के संयुक्त तत्वाधान में किया गया है। धर्मवीर भारती के लिखे इस नाटक को बिहार आर्ट थियेटर की ओर से वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार ने निर्देशित किया था। नाटक में महाभारत के अठारहवें दिन की शाम की कहानी से लेकर श्रीकृष्ण की मृत्यु तक को दिखाया गया।

ये थे कलाकार

सुनीता भारती, उदित कुमार, चक्रपणि पाण्डेय, डॉ शंकर सुमन, मो. दानिश, सुजित कुमार शर्मा, नीरज कुमार, नीरज सिंह, वैभव विशाल, रंजन कुमार, प्रवीण कुमार।

निर्देशक	सुमन कुमार
सहायक निर्देशक	सुनीता भारती
प्रस्तुति प्रभारी	प्रदीप गांगुली
प्रस्तुति नियंत्रक	कुमार अनुपम
प्रकाश-	उपेंद्र कुमार, राजकुमार शर्मा

नाटक अंधा युग के मंचन से पहले हुई गणेश वंदना

नाटक अंधा युग

डॉ चतुर्भुज रंग पत्रकारिता सम्मान से किए गए सम्मानित

पटना। छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव 2015 के पहले दिन इस वर्ष के डॉ चतुर्भुज रंग पत्रकारिता सम्मान से दैनिक भास्कर के पत्रकार साकिब इकबाल खां को वरिष्ठ साहित्यकार ऋषिकेश सुलभ के हाथों सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव, बिहार राज्य संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा, मगध कलाकार की अध्यक्ष डॉ मिथलेश कुमारी मिश्र, सचिव डॉ अशोक प्रियदर्शी, कला जागरण के अध्यक्ष गणेश सिन्हा, सचिव सुमन कुमार, वरिष्ठ रंगकर्मी अमीय नाथ चटर्जी, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा समेत बड़ी संख्या में शहर के रंगकर्मी और बुद्धिजीवी मौजूद थे।

नाटक नाटक अंधा युग कालिदास में अलोक धन्वा, राम कृपाल यादव, ऋषिकेश सुलभ, ध्रुव कुमार।

गांधी चौक का हुआ मंचन

नाटक में दिखी देवन मिसिर की बुद्धिमानी

ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के अंतर्गत हुआ 'अंधा युग' का मंचन

मंच पर दिखा महाभारत

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

यह महायुद्ध के अंतिम दिन की संध्या है. छाई चारों ओर उदासी गहरी है. कौरव के महलों का सूना गलियारा है. घूम रहे केवल दो बूढ़े प्रहरी. इस संवाद मात्र ने दर्शकों को बताया कि नाटक महाभारत से जुड़ा है. कालिदास रंगालय में बुधवार को नाटककार डॉ चतुर्भुज की स्मृति में छठा अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव समारोह के आयोजन में इस नाटक का मंचन किया गया. इस संवाद के तुरंत बाद ही मंच पर दिख रहे दो प्रहरियों ने सूत्रधार बनने का काम किया और नाटक अंधायुग के बारे में दर्शकों को बताया. धर्मवीर भारती द्वारा लिखे इस बेहतरीन नाटक के निर्देशक सुमन कुमार थे.

नाटक की मंच सज्जा ही नाटक की कहानी कह रही थी. एक तरफ बैठी गांधारी और धृतराष्ट्र, तो दूसरी तरफ कथा को गायन के रूप में बतानेवाले दो कलाकार. बिहार आर्ट थियेटर के नये और पुराने स्टूडेंट्स ने मिल कर इस नाटक को पूरा किया. मंचित नाटक काफी कठिन था, जिस कारण कुछ एक कलाकारों को संवाद अदायगी में हल्की दिक्कत भी आयी. हालांकि नाटक में इसका काफी ज्यादा असर नहीं दिखा. पुराने कलाकार जैसे धृतराष्ट्र बने उदित कुमार और अश्वत्थामा बने उमंग ने बेहतरीन अदाकारी से वाहवाही भी लूटी. नाटक के निर्देशक वरिष्ठ रंगकर्मी और वरिष्ठ निर्देशक हैं, जिस कारण नाटक में काफी गंभीरता दिखायी दी.

नाटक 'अंधा युग'

यह संवाद रहा बेहतरीन

टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा, उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा. पांडव ने कम, कौरव ने कुछ ज्यादा. यह रक्तपात अब कब समाप्त होगा. यह अजब युद्ध है. नहीं किसी की जय. दोनों पक्षों को खोना ही खोना है. अंधों से शोभित था युग का सिंहासन. दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन. अधिकारों का अंधापन जीत गया. जो कुछ सुंदर था, शुभ था, वह हार गया, द्वापर युग बीत गया.

ये कलाकार थे मौजूद

नाटक में लगभग सभी कलाकारों ने बेहतर अदाकारी की. इनमें सुनीता भारती, उदित कुमार, उमंग, चक्रपाणि पाण्डेय, डॉ शंकर सुमन, मुहम्मद दानिश, सुजीत, नीरज, वैभव, रंजन, प्रवीण मौजूद थे.

'देवेन मिसिर' के साथ शुरु हुआ रंग-ए-जमात नाट्य महोत्सव

पटना. ग्यारह दिवसीय नाट्य महोत्सव रंग-ए-जमात की शुरुआत बुधवार को प्रेमचंद रंगशाला में नाटक 'देवेन मिसिर' के साथ हुई. मंच पर नाटक शुरू होने से पहले ही नाटक के प्रति लोगों की उत्सुकता देखने को मिल रही थी. प्रयास संस्था द्वारा प्रस्तुत इस नाटक के लेखक व निर्देशक दोनों ही मिथिलेश सिंह हैं. हॉल में बैठे सभी दर्शकों ने देवेन मिसिर नाटक को देख खूब तालियां बजायीं. .

देवेन मिश्र से बने देवेन मिसिर : देवेन मिसिर नाटक की कहानी वैसे तो मगही क्षेत्र में काफी फेमस है, लेकिन पटना के मंच पर भी लोगों ने इसे खूब सराहा. इसमें बताया गया कि टेकारी राज के अंतिम महाराज गोपाल शरण सिंह के पूर्वज राजा सुंदर सिंह के काल में देवेन मिसिर हुआ करते थे. उनका नाम देवेन मिश्र था. बाद में मिश्र शब्द अपभ्रंश होकर मिसिर के नाम से प्रचलित हो गया. देवेन मिसिर पूरे गांव में प्रसिद्ध थे. लोगों की परेशानियों को वह अच्छे से समझते और उसका निदान भी निकालते. दो घंटे के इस नाटक में देवेन मिसिर की कई कहानियां दिखायी गयीं, जिसमें वे गांव के कई लोगों की परेशानियों का हल पल भर में निकाल देते हैं. इसलिए देवेन मिसिर को टेकारी दरबार का बीरबल भी कहा जाता है. व्यंग्य पर आधारित इस नाटक को देख लोगों ने खूब ठहाके भी लगाये.

गांधी चौक में दिखी समाज की असलियत : इस महोत्सव में वैशाली द्वारा अंजारूल हक के निर्देशन में बने नुक्कड़ नाटक गांधी चौक भी प्रस्तुत किया गया, जिसमें गांधी मूर्ति के पास फैली हुई गंदगी को उजागर किया गया. इस नाटक में यह दिखाया गया कि साल में एक या दो दिन, तो लोग गांधी जी को याद कर लेते हैं, लेकिन बाकी दिन शहर के कई गांधी चौक पर लोग ऐसे कई काम करते हैं, जिससे शर्मिंदगी महसूस होती है.

पीयू में ग्रेजुएशन फाइनल इयर का एग्जाम आज से

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

पटना यूनिवर्सिटी में बीए, बीएससी, बीकॉम (ऑनर्स) सब्जेक्ट के फाइनल इयर का एग्जाम गुरुवार से शुरू हो रहा है. एग्जाम की तैयारियां पीयू द्वारा पूरी कर ली गयी है. वहीं दूसरी ओर परीक्षार्थी दिन-रात पढ़ाई में लगे हैं. एग्जाम 12 फरवरी से शुरू होकर 27 फरवरी तक चलेंगी. बुधवार को एग्जाम को लेकर यूनिवर्सिटी व पुलिस प्रशासन के साथ बैठक हुयी. बैठक में सीटी एसपी के साथ पुलिस के कई अधिकारी भी मौजूद थे. लगभग साढ़े छः हजार परीक्षार्थी परीक्षा में भाग लेंगे. फाइनल इयर के कुछ वोकेशनल कोर्स का एग्जाम 16 से शुरू हो रहा है. वहीं सेकेंड इयर के लिए लेट फाइन के साथ बुधवार तक परीक्षा फॉर्म भरे गये. सेकेंड इयर का एग्जाम 11 मार्च से 6 अप्रैल के बीच आयोजित होंगी. फर्स्ट इयर की परीक्षाएं 8 अप्रैल से 5 मई के बीच आयोजित होंगी. फर्स्ट इयर के लिए परीक्षा फॉर्म 16 फरवरी से भरे जायेंगे.

- पीयू में थर्ड इयर की परीक्षा चलेगी 27 तक

अंतिम तिथि 3 मार्च

बिना फाइन के फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 3 मार्च है. वहीं लेट फाइन के साथ फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 14 मार्च है. सेकेंड इयर में भी एक्सट्रा क्लासेज चल रहे हैं. परीक्षा को देखते हुए सिलेबस में बचे हुए पार्ट पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है. वहीं कुछ जगहों पर रिवीजन भी चल रहा है और स्टूडेंट्स को जहां कोई परेशानी है वे अपने शिक्षकों से संपर्क कर रहे हैं.

Khamosh Adalat Jaree Hai / Vijay Tendulkar (खामोश, अदालत जारी है/विजय तेंडुलकर)

Played Leela Benare: The Protagonist

वासना के दंश से बेजान जिंदगी

'तुम्हें जीवित छोड़कर तुम्हारे गर्भ में पल रहे जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाए, ताकि तुम्हारे पाप कर्मों का सबूत भावी पीढ़ी के लिए मौजूद न रहे।' जज के इस फैसले के रूप में बुधवार को ये पुरुष प्रधान सोच उभर कर सामने आई। कालिदास रंगालय में मौका था नाटक 'खामोश, अदालत जारी है' के मंचन का। शहर में पच्चीस साल बाद हुई इस प्रस्तुति को कला जागरण के कलाकारों ने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को समर्पित किया।

क्यों कुछ नाटकों का नाम स्वर्ण अक्षरों मे लिखा जाता है। क्यों उसे दुनिया भर के लोगों से सराहना मिलती है। और क्यों कुछ नाटक हरेक काल में सार्थक होते हैं। ये सारी बातें विजय तेंदुलकर लिखित इस नाटक को देखकर सभी अपने आप ही समझ आ जाती है। नाटक के निर्देशक सुमन कुमार ने कहा कि इतने दिनों बाद इस नाटक की प्रस्तुति स्त्रियों को उसका हक दिलाने की एक कोशिश है।

उभरा स्त्री जीवन का दर्द

एक स्त्री के लिए अपने मन से फैसले लेना व उस पर अमल करना कितना मुश्किल होता है, यही इस नाटक के केंद्र में है। साथ ही एक स्त्री को केंद्र में रखकर नाटक पुरुष प्रधान सोच व स्त्री के लिए हीन भाव से ग्रसित समाज को भी प्रमुखता से उजागर करता है।

एक स्त्री की अपनी देह ही किस तरह से उसकी दुश्मन हो जाती है। समाज में ही नहीं घर में भी उसकी अस्मत पर खतरा मंडराता रहता है। वह किसी की वासना की शिकार होती है। फिर समाज की अदालतें चलती हैं। सुनवाई होती है और होती ही रहती है। स्त्री पिसती रहती है, लेकिन फैसले कभी नहीं आते। नाटक की मुख्य पात्र लीला बेणारे भी ऐसी ही पात्र है जो समाज के अधिकांश स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है।

कालिदास रंगालय में नाटक 'खामोश! अदालत जारी है' का मंचन

कालिदास रंगालय में 'खामोश! अदालत जारी है' का मंचन करते कलाकार जागरण

संवादों में स्त्री मन की झलक

नाटक के अधिकांश संवादों से एक स्त्री का अंतर्मन झांकता प्रतीत होता है। 'यह बीसवीं शताब्दी के सुसंस्कृत मानव के अवशेष हैं। देखो ये चेहरे कितने जंगली लग रहे हैं। होठों पर घिसे पिटे खूबसूरत औपचारिक शब्द हैं और भीतर है अतृप्त और विकृत वासनाएं।' ऐसे संवादों ने लोगों को अपने वास्तविक चेहरे से रूबरू कराया। 'यह शरीर मुझे चाहिए, मेरे बच्चे के लिए। उसे मां चाहिए, पिता का हकदार है वह। उसे घर चाहिए, संरक्षण चाहिए, प्रतिष्ठा चाहिए।' ऐसे संवादों में स्त्री की सामाजिक जिम्मेदारी भी झलकी।

ये रहे मंच के कलाकार

लीला बेणारे	सुनीता भारती
बालू रोकड़े	नीतीश कुमार
मिसेज काशीकर	अनुप्रिया
काशीकर	डॉ. शंकर सुमन
कर्णिक	चक्रपाणि पांडेय
सुखात्मे	एस रिज्वानुद्दीन
सामंत	वीर प्रसाद सिंह
पोंक्षे	पुष्कर दयाल
अन्य	आशीष राज, विकास कुमार

नेपथ्य के कलाकार

प्रदीप गांगुली, आदिल रशीद, उपेंद्र कुमार, अरविंद कुमार, राजेश कुमार, संजय कुमार, विनोद कुमार, मो. जईम, दिव्य रतन, सुनील भगत, धर्मेश मेहता, सुनीता भारती, गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, कुमार अनुपम, अरुण कुमार सिन्हा, गुप्तेश्वर कुमार, सुधा खेतान, रमेश सिंह आदि नेपथ्य सहयोगी थे।

में मंचित हुआ।

नाटक में समाज की खामियां उजागर

पटना | कार्यालय संवाददाता

करीब 25 साल बाद पटना के रंगदर्शकों को 'खामोश अदालत जारी है' नाटक देखने को मिला। 25 साल पहले कला संगम ने मंचित किया था तो इस बार कला जागरण ने किया। उस समय सतीश आनंद का निर्देशन था, तो इस बार सुमन कुमार का। सामाजिक विद्रूपताओं की कलई खोलने वाला यह नाटक इस बार भी दर्शकों को बांधने में सफल रहा। विजय तेंदुलकर लिखित नाटक को कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवंत करने की भरपूर कोशिश की।

अदालत का फैसला : एक स्त्री के साथ समाज के छल और मर्दाना यौन-कुंठा की एक प्रभावी तस्वीर नाटक में देखने को मिली। कैसे एक स्त्री को पहले बचपन के प्यार से धोखा मिला, फिर जवानी में बिन ब्याही मां बनने का दंश मिला और आखिर में कैसे अदालत उसके भ्रूण हत्या का आदेश देती है इसे कलाकारों ने मंच पर उतारा। सारा दोष स्त्री के माथे थोप दिया जाता है...। समाज की अदालत आज भी जारी है...खामोश अदालत जारी है...।

नाटक के कलाकार- सुनिता भारती, शंकर सुमन, एस रिज्वानुद्दीन, नितीश कुमार, चक्रपाणि पांडेय, वीर प्रसाद सिंह, पुष्कर दयाल, अनुप्रिया, कुमार विक्की और विकास कुमार।

कालिदास रंगालय में बुधवार को खामोश अदालत जारी है का मंचन करते कलाकार।

Nagmandal / Girish Karnad (नागमंडल /गिरीश कर्नाड) Played 'Ranee', the Protagonist

गणेश स्तुति से किया। इसके बाद गतभाव, गत निकास, कविता आदि कलाकार अक्षरा सिंह मौजूद रहे।

पीड़ा • समाज में स्त्रियों को लंबे समय से दोयम दर्जे का बनाकर रखा गया

नाटक नागमंडल में नारी के शोषण की अंतहीन दास्तान

KALIDAS

पटना • डीबी स्टार

समाज में स्त्रियों को लंबे समय से दोयम दर्जे का बनाकर रखा गया है। पुरुष लाख कुकर्म कर ले लेकिन स्त्रियों से हमेशा चरित्रवान होने की उम्मीद करता है। महिलाओं के चरित्र पर बात-बात में सवाल उठाए जाते रहे हैं। इन बातों को रविवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक नागमंडल में दिखाया गया। माध्यम फाउंडेशन की प्रस्तुति और गिरीश कर्नाड द्वारा लिखित इस नाटक की परिकल्पना और निर्देशन राकेश कुमार का था।

नाटक नागमंडल लोककथा पर आधारित था, इसके मूल में इच्छित रूप धारण करने वाले नाग की कहानी है। नाटक की मुख्य पात्र एक ऐसी स्त्री है जो नैतिकता नाम पर मानसिक यातना को झेलने को विवश है।

नाग स्त्री के पति का रूप धारण उससे शारीरिक संबंध स्थापित कर लेता है। नाटक में परपुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित होने से नारी की दुविधामयी स्थिति को दिखाया गया। वह अपने पति की उपेक्षा से आहत है। नाटक में धारित गर्भ के कानूनी और नैतिक पक्षों की पड़ताल भी दिखाई गई। नाटक में नाग को पुरुष के विकृत भावों का प्रतीक मानकर नारी के असहाय बोध और दांपत्य जीवन के अंतरद्वंद्व को दिखाया गया।

कालिदास रंगालय में नाटक नागमंडल के मंचन के दौरान अभिनय करते कलाकार।

यह थे कलाकार

राहुल कुमार, सौरभ कुमार, संटू कुमार, शिवम कुमार, आदित्य राज सिंह, चित्रा श्रीवास्तव, सुनीता भारती, विवेक कुमार, विभा सिन्हा, गुंजन कुमार आदि।

प्रयास करना चाहिए. यह सपना आदि मौजूद थे.

'नागमंडल' से दिखी नारी संघर्ष की कथा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

पति से उपेक्षित एक औरत की भावनाओं को लेकर गिरीश कनार्ड द्वारा गढ़ा गया नाटक 'नागमंडल' रिश्तों के धरातल पर मायावी दुनिया को भी जीवंत करता है. यह रिश्तों, खास कर पति-पत्नी के संदर्भ में बुने गये ताने-बाने की कहानी है जिसे बड़े ही नाटकीय तरीके और साफगोई से बयां किया गया है. रविवार को माध्यम फाउंडेशन द्वारा कालिदास रंगालय में इसे पेश किया गया. राकेश कुमार द्वारा निर्देशित इस नाटक में एक ऐसी औरत की कहानी है, जिसका पति उसे पसंद नहीं करता और अपनी मालकिन के प्रेम में फंसा हुआ है. वह अपनी पत्नी से हमेशा मारपीट करता है. पड़ोस में रहने वाली एक अंधी औरत उसकी पत्नी को टोकती है. इसके बाद उसे पति को अपने वश में करने के लिए टोटके से सम्मोहित करने की जुगत बताती है, मगर वह फेल हो जाती है. इसके बाद उसे एक तरल पदार्थ देती है और उसे उबाल कर पिलाने को कहती है. औरत तरल पदार्थ को उबालती है, मगर वह जहर की तरह लगता है. और वह डर के कारण अपने पति को नहीं

गर्भवती हो जाती है मगर पति के इस दोहरे रूप से अनजान रहती है. जब वह गर्भवती होने की बात पति से बताती है तो वह उसे ताने देता है. पंचायत में उसे कसम खाने कहा जाता है, तब नाग ही उसे कहता है अग्नि नहीं नाग को पकड़ कर कसम खाना. कसम खाते हुए वह बोलती है आज तक मैंने अपने पति और नाग के सिवाय किसी को स्पर्श नहीं किया. इसके बाद गांव के लोग इसे देवी का अवतार मान लेते हैं और गांव की रक्षा करने को कहते हैं.

निर्देशक राकेश कहते हैं कि पति बुरा होकर भी बुरा नहीं मगर औरत बुरी न होते हुए भी बुरी, आखिर क्यों? वह कहते हैं कि यह नाटक औरत के उसी द्वंद्व को लेकर बुना गया है जिसका संताप वह युगों से झेलती आ रही है. मंचन के जरिए समाज में नारी संघर्ष की कथा का वर्णन किया गया. नारियों पर होने वाले उत्पीड़न को दिखाया गया.

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

अस्तित्व की लड़ाई लड़ती सकीना

पटना. पूरे मोहल्ले के लड़के सकीना के हुस्न के दीवाने रहते हैं. उसके घर के आगे-पीछे लड़के मंडराते हैं, तरह-तरह की बातें बनाते हैं, लेकिन

Nagmandal / Girish Karnad (नागमंडल /गिरीश कर्नाड) Played 'Ranee', the Protagonist

Play portrays condition of women in society

HT Correspondent
htpatna@hindustantimes.com

PATNA: The Bihar Art Theatre (BAT), one among the prominent theatre groups of the state capital, offered Patnaites a show based on work of veteran actor, director Girish Karnad at the Kalidas Rangalay here on Sunday.

Titled as 'Nagamandal', the play was adapted from a folk tale in Karnataka. It was a sensitive portrayal of the condition of women in our society and depicted their physical and psychological exploitation and their suppression through the story of Rani, the protagonist, who is blamed for extra marital affair and is punished and persecuted because of that.

Snakes in the play symbolised evil forces in the society while the woman represented innocence and simplicity and the two were juxtaposed in the play.Rakesh Kumar, the director, said the work was in fact the ground reality of our society. "It's a hard-hitting comment on the status of women. We selected this work because theatre is not only an entertainment, but also a platform to raise serious social issues," he said.

The play was presented under the banner of Madhyam Foundation. Sunita Bharti ably enacted the role of the protagonist while the others in the cast included Vivek Kumar in the role of Nagappa, Gunjan Kumar, Vibha Sinha, Rahul Kumar, Sourabh Kumar, Shivam Kumar, Chitra Shrivastav, Aditya Raj Singh and Santu Kumar.

While the dance direction was given by Om Prakash, music by Rakesh Kumar and light arrangement was made by Raj Kumar and Deepak Kumar.

Pradeep Ganguli, Kalidas Rangalay in-charge, said the place had kept offering a variety of plays for the last several weeks. "Patnaites have enjoyed here works like 'Kaase Kahun', the story of a woman and 'Vijay' based on the story of the great Magadh ruler, Emperor Ashok," he said.

OCUS www.inextlive.com/patna i next, Patna, 1 February 2016 5
Tiranga instills a feeling of pride in all of us and unifies every Indian irrespective of any differences.@MPNaveenJindal

जब इच्छाधारी नाग बन गया पति

PIC: I NEXT

औरतों के साथ ही ऐसा क्यों होता है...

चल... हट... मुझे अपना काम करने दे

तेरा यहां क्या काम...

कालिदास रंगालय में हुआ नाटक नागमंडल का मंचन

patna@inext.co.in

PATNA (31 Jan): माध्यम फाउंडेशन द्वारा रविवार को कालिदास रंगालय में नाटक नागमंडल का मंचन किया गया. नाटक का निर्देशन राकेश कुमार ने किया.

नारी की दुविधामयी स्थिति

को प्रयास पटना के द्वारा रवीन्द्र भवन सभागार में नाटक मजहबी शकीना का मंचन किया गया. नाटक का निर्देशन मिथिलेश सिंह ने किया.

हक की लड़ाई लड़ती रही

शमोएल अहमद द्वारा लिखित मजहबी शकीना

नाटक 'नागमण्डल' में दिखा नारी शोषण का रूप

पटना (एसएनबी)। समाज में नारी का शोषण हर कदम पर हो रहा है। यही दृश्य रविवार को कालिदास रंगालय में देखने को मिला। मौका था माध्यम फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित नाटक 'नागमंडल' के मंचन का। नाटक के लेखक गिरीश कर्नाड हैं निर्देशन राकेश कुमार ने किया।

कथासार : नाटक का आधार लोककथा है। इसके मूल में इच्छित रूप धारण करने वाले नाग की संकल्पना है, जो भारतीय दंतकथाओं की लोकप्रिय कथावस्तु रही है। नाटक के माध्यम से नारी शोषण का भी चित्रण किया गया। पति के रूप में किसी पर पुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित होने पर नारी की दुविधामयी स्थिति की कल्पना की गई है।

नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

परिणाम स्वरूप धारित गर्भ के कानूनी और नैतिक पक्ष की पड़ताल करने का प्रयास भी किया गया है। रानी जो कथा के मूल में है, अपने गर्भ का रहस्य नहीं जानती है। अपने मूल पति की उपेक्षा से आहत रानी कब एक मनुष्यरूपी नाग का गर्भ धारण कर लेती है, यह स्वंय उसे भी पता नहीं चलता। नाटक नाग को पुरुष के विकृत भावों का प्रतीक मानकर नारी के असहाय बोध और दांपत्य जीवन के विविध अंतर्द्वंद्व को नाटकीय और तर्कसंगत चित्रण करता है।

कलाकार : राहुल कुमार, सौरभ कुमार, संटू कुमार, शिवम कंमार, आदित्य राज सिंह, चित्रा श्रीवास्तव, सुनीता भारती, विवेक कुमार, विभा सिन्हा, गुंजन कुमार, यूरेका किम, आर नरेन्द्र, अजय कुमार श्रीवास्तव, मनोज कुमार, फहीमउद्दीन, अमित कुंमार, सुधीर कमल, विकास कुमार आदि ने अभिनय किया।

Gora / Ravindranath Tagore (गोरा/रवीन्द्र नाथ ठाकुर) Played Sucharita : A Central Role

LKING ABOUT

PATNA TIMES, THE TIMES OF INDIA 3

Photos: Tahir Hadi

Bringing alive 19th century Bengal

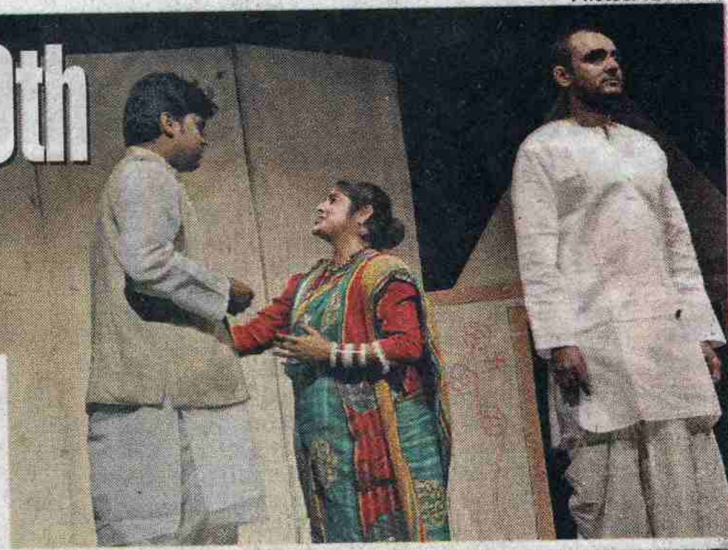

The Madhyam Foundation recently staged a play based on Rabindranath Thakur's novel Gora at a city auditorium. The play, sponsored by the Union cultural ministry, was inaugurated by art, culture and youth department minister **Shiv Chandra Ram**.

Directed by **Dharmesh Mehta**, the play depicted the social, political and religious scenes of Bengal in the 19th century. The story revolved around the early days of Bengal when people were busy in self-searching, resolutions, conflicts and self-discovery.

The lead actors of the play, **Vivek Kumar** and Dharmesh Mehta (also the director), enthralled the audience with their strong performance. The theatre was packed capacity and theatre enthusiasts were engrossed in the play. **Shamita Mehra**, a school teacher who had come to watch the play, said, "I came with my family to enjoy this play because I think theatre always has something new to teach. The play was informative and educative as well. Children can benefit a lot by watching such plays." Adding to her, another member from the audience, **Sanjay Singh** said, "I really appreciate this play because a lot of people were not aware about what it showcased. The theme and storyline were quite different and interesting. My curiosity was intact throughout the play. It also had a great connect with the audience."

Talking about the best part of the play, **Sanju Jain** explained, "I liked the scene when it was disclosed that during the adverse situation in Bengal, Krishnadayal had to adopt Gora as his son. Since Gora belonged to a European nation, his spiritual ideologies were different from his father's. But this truth was hidden from Gora for very long."

— Swati.Savarn@timesgroup.com

Scenes (also above) from the play

पटना

पटना, शुक्रवार, 8 जनवरी, 2016 10

गोरा में दिखा... इंसान को धर्म में मत बांटो

पटना | रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यास गोरा पर आधारित नाटक का गुरुवार को लगातार दूसरे दिन कालिदास रंगालय में मंचन हुआ। धर्म के नाम पर तरह-तरह की सामाजिक बुराइयों को सही ठहराने की कोशिश की जाती है। धर्म में व्याप्त इन्हीं कुसंगतियों पर प्रहार करता यह नाटक लगातार दूसरे दिन अपने प्रयास में सफल दिखा। राजधानीवासियों को समाज में जाति और धर्म के नाम पर भेदभाव से दूर रहने को जागरूक करता और इंसान को इंसान मानकर उसे हिंदू, मुसलमान या जाति के आधार पर बांटने की बजाए मानवता दिखाने की अपील करता यह नाटक माध्यम फाउंडेशन की तरफ से लगातार दो दिन मंचित किया गया। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से मंचित इस नाटक का निर्देशन धर्मेश मेहता ने किया। नाटक के जरिए मेहता ने यह बताने की कोशिश की कि मनुष्य का मूल्यांकन उसके गुणों के आधार पर होना चाहिए ना कि उसकी जाति, धर्म और रंग के आधार पर।

ये रहे कलाकार- विशाल तिवारी, गुंजन कुमार, आर नरेंद्र, चित्रा श्रीवास्तव, विभा सिन्हा, विवेक कुमार, सरविंद कुमार, राकेश मेहता, सुनीता भारती, युरेका किम, कुणाल सिकंद, अजय कुमार श्रीवास्तव, सुधीर कमल, रानू कुमार, डॉ विकास कुमार, अमित कुमार, मो. सद्दरूदीन, रणधीर, फहीमुद्दीन, शोभा सिन्हा, सौरभ कुमार।

नाट्य रूपांतरण – विवेक कुमार और धर्मेश मेहता, मंच परिकल्पना और निर्देशन- धर्मेश मेहता

Ashok / Dr. Siddhnath Kumar (अशोक/डा. सिद्धनाथ कुमार)
Played Shakyakumaree: the Lover & Wife of the Protagonist

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
हलचल

युद्ध से हत्या होती है, विजय नहीं

आखिर विजय क्या है? एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए लाखों लोगों की मौत क्या वाकई किसी की जीत है? क्षत-विक्षत शवों के ढेर, तड़पते घायल, विलाप करती विधवाएं! इसमें विजय कहां है? कलिंग युद्ध के बाद इन सवालों ने सम्राट अशोक के दिलोदिमाग में उथलपुथल मचा दिया। जीत का जश्न मनाने की जगह उनका दिल रो उठा। तब उन्हें एहसास होता है कि असली जीत राज्यों को जीतने से नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं को जीतने से हासिल होती है। वे शांति और अहिंसा का व्रत लेते हुए बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। ये ऐतिहासिक दृश्य बुधवार को कालिदास रंगालय के मंच पर प्रस्तुत हुए। मौका था सातवें डॉ चतुर्भुज अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का। महोत्सव के पहले दिन कला जागरण पटना द्वारा नाटक 'अशोक' का मंचन का किया गया। सिद्धनाथ कुमार के लिखे नाटक की सुमन कुमार के निर्देशन में प्रस्तुति हुई।

अशोक के हृदय परिवर्तन की कहानी

नाटक में मौर्य सम्राट अशोक के जीवन का एक विश्लेषणात्मक चित्रण है। मंच पर तक्षशिला, पाटलिपुत्र एवं कलिंग की पृष्ठभूमि दिखाते हुए अशोक के जीवनकाल के विभिन्न हिस्सों को प्रस्तुत किया गया। अशोक ने जब मगध साम्राज्य का सिंहासन संभाला तो उनके मन में विस्तार की विराट महत्वाकांक्षा जाग उठी। उन्होंने राज्यों को जीतना शुरू कर दिया। अनेक युद्ध किए। आखिर में उनकी निगाह में कलिंग आया। उसे जीतने के लिए उन्होंने भयानक युद्ध किए। कई दिनों तक युद्ध चलते रहा। आखिर अशोक को विजय हासिल तो हुई, लेकिन लाखों मौतों और जख्मों की कीमत पर। युद्धभूमि के दृश्य देखकर उनका दिल दहल गया। उन्हें एहसास हुआ कि मानवता का कितना नुकसान हुआ है। वे प्रायश्चित करने की राह पर निकल पड़ते हैं और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। पूरी दुनिया में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने लगते हैं। अशोक का जीवन पूरी तरह बदल जाता है।

कालिदास रंगालय में 'अशोक' नाटक का मंचन करते कलाकार जागरण

मंच पर कलाकार	
सम्राट अशोक	आमिर हक
राधागुप्त	रूबेश कुमार
अमात्य	मिथिलेश प्रसाद सिन्हा
शाक्य कुमारी	सुनीता भारती
असंधिमित्रा	प्रीति सिंह
मुनादी	अमित
प्रतिहारी	विवेक, दीपक
संघमित्रा	नेहा
बिंदुसार	सरविंद कुमार
कलिंगराज	शंकर सुमन

नेपथ्य कलाकार	
रूप सज्जा	हीरालाल राय
वस्त्र निर्माण	मोहम्मद सदरुद्दीन
मंच सज्जा	अविनाश कुमार
मंच निर्माण	हीरा लाल मिस्त्री

नाट्य महोत्सव का उद्घाटन बिहार संगीत नाट्य अकादमी के अध्यक्ष और वरिष्ठ कवि आलोक धन्वा व दूरदर्शन पटना के निदेशक पीएन सिंह ने किया। डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में स्मारिका का विमोचन भी किया गया। युवा लेखक व फिल्मकार रविराज पटेल को डॉ. चतुर्भुज नाट्य पत्रकारिता सम्मान दिया गया। मौके पर डॉ. अरविंद कुमार, नीरज बावरिया, सुशील शर्मा आदि मौजूद थे।

कालिदास रंगालय में सुमन कुमार के निर्देशन में 'अशोक' नाटक के साथ शुरू हुआ अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव

...और महत्वाकांक्षी अशोक बदल गया

पटना | कार्यालय संवाददाता

सत्ता के लिए इतना रक्तपात...महत्वाकांक्षा मनुष्य से क्या-क्या नहीं कराती...महत्वाकांक्षाएं मरती नहीं, उनका स्वरूप बदलता है...इस तरह के संवादों से पूरा नाटक भरा था। संवाद दर्शकों को बेहद पसंद आ रहे थे। हर दो-चार मिनट पर तालियां बज रही थी। कालिदास रंगालय में बुधवार शाम 'अशोक' नाटक का पहली बार मंचन हुआ और इसी के साथ अखिल भारतीय नाट्योत्सव की शुरुआत भी हो गई। कला जागरण के कलाकारों ने डॉ. सिद्धनाथ लिखित नाटक को सुमन कुमार के निर्देशन में मंच पर उतारा।

पूरी तैयारी के साथ : सम्राट अशोक के जीवन पर केंद्रित इस नाटक को कलाकारों ने बेहद प्रभावी तरीके से मंच पर उभारा। हालांकि मंच सज्जा के लिहाज से कुछ खास नहीं दिखा, लेकिन कलाकारों ने अपने अभिनय से इस कमी को लगभग ढंक दिया। चाहे अशोक की भूमिका निभा रहे आमिर हक हो, पत्नी की भूमिका निभा रही सुनिता भारती व प्रीति सिंह हो, इन कलाकारों ने अपने चरित्र के साथ पूरा न्याय किया। कैसे सत्ता के लिए अशोक ने अपने भाईयों की हत्या तक करवा दी और आखिर में कैसे बौद्ध धर्म की शरण में चला गया, इसे मिथिलेश सिन्हा, अमित, सरविंद, शंकर सुमन, सुधीर कमल, विवेक, दीपक, नेहा, खालिद खान, पारितोष, सूरज लाल, चंदन जैसे कलाकारों ने प्रभावी तरीके से उतारा। पिछली अन्य प्रस्तुतियों की अपेक्षा कला जागरण की यह प्रस्तुति ज्यादा प्रभावी दिखी।

डॉ. चतुर्भुज नाट्य सम्मान : पहले दिन युवा लेखक व समीक्षक रविराज पटेल को डॉ. चतुर्भुज नाट्य पत्रकारिता सम्मान दिया गया। इस मौके पर संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा, डीडी बिहार के निदेशक पीएन सिंह, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, गणेश प्रसाद सिन्हा, मिथिलेश कुमारी, डॉ. बीएन विश्वकर्मा, अमियनाथ चटर्जी, कन्हैया, नीलेश्वर उपस्थित रहे।

नाट्योत्सव में आज

- स्पार्टकस लेट्स फाइट
- प्रस्तुति-बंगाल नाट्य दल, सुबुझ सांस्कृतिक मंच
- समय-6.30 बजे से

कालिदास रंगालय में अखिल भारतीय नाट्योत्सव के पहले दिन बुधवार अशोक नाटक का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

मंच पर आये नये नाटक

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शहर में नाटकों का मंचन मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन है. नाटक अगर अच्छे हो, तो पूरा हॉल भर जाता है. पिछले कुछ सालों से एक ही नाटक का मंचन लगातार किया जा रहा था. प्रभात खबर ने एक नाटक को बार-बार दोहराये जाने पर 27 दिसंबर के अंक में 'लोग पुराने नाटकों से बोर हो चुके हैं' शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी. इस खबर को पढ़ने के बाद सोशल मीडिया में रंगमंच से जुड़े लोगों व कला प्रेमियों ने इस मुद्दे पर चर्चा की. कई ने इस बात को स्वीकारा कि नये नाटक भी होने चाहिए, ताकि दर्शक बोर न हो. प्रभात खबर की खबर का असर अब पटना में नजर आ रहा है. पिछले कुछ दिनों में कई नये नाटकों का मंचन हुआ है. नये नाटकों को देख रहे लोगों ने प्रभात खबर को धन्यवाद कहा और सभी नाटकों की तारीफ भी की.

लाइफ इंपैक्ट

बिहार आर्ट थियेटर एवं कालिदास रंगालय के संस्थापक नाट्यकार, निर्देशक, स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय अनिल कुमार मुखर्जी की 98वीं जयंती के अवसर पर आयोजित 23वां पटना थियेटर फेस्टिवल के आयोजन का सोमवार को आखिरी दिन था. आखिरी दिन नाटक भामा साह का मंचन किया गया. लेखक छोटू नारायण सिंह ने महाराणा प्रताप की कहानी को नाट्य लेख रूप दिया. वहीं निर्देशक उपेन्द्र कुमार ने कलाकारों से काफी अच्छी अदाकारी करवायी. नाटक हल्दी घाटी की लड़ाई के बाद की कहानी को मंच पर दिखाता है. जिस लड़ाई के बाद महाराणा प्रताप को अरावली के जंगलों में शरण लेनी पड़ी थी. इसके बाद भी वे अकबर से हार नहीं माने थे और मुगलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध करते रहे. नाटक में सतवीर कुमार, स्नेहा रानी, राजु सिंह, उदय कुमार सिंह, सुनीता भारती, कुमार सोनू शंकर, अभिषेक कुमार ने बेहतरीन एक्टिंग की.

प्रकाशित खबर

खबर के बाद हुए नये नाटक

■ **1 जनवरी :** अंधेर नगरी, दरोगा जी चोरी हो गयी, विरोध ■ **4 जनवरी :** गड्ढा (अभियान संस्कृति मंच) ■ **6 जनवरी :** पोलटीस (प्रेरणा संस्था) ■ **12 जनवरी :** धरती आबा (निर्माण कला मंच) ■ **12 जनवरी :** डाक घर (बिहार आर्ट थियेटर) ■ **14 जनवरी :** दो हाथ (बिहार आर्ट थिएटर)

मंच पर इन दिनों हुए नये नाटक

■ 15 जनवरी : मास्क (मॉडर्न माइम सेंटर) ■ 15 जनवरी: जानेमन (एचएमटी) ■ 16 जनवरी : साउंड ऑफ वूमेन (सरगम आर्ट्स) ■ 16 जनवरी : अधिष्ठाता (चेतना समिति) ■ 17 जनवरी : जूता का आविष्कार (कृष्णायण) ■ 18 जनवरी : अंधा मानव (श्री गणेश कला संस्थान) ■ 18 जनवरी: जो लौट नहीं सकते (आर्ट एंड आर्टिस्टको) ■ 19 जनवरी : सुपनवा का सपना (इप्टा, मधेपुरा) 20 जनवरी – भामा-शाह (बिहार, नाट्यकला प्रशिक्षणालय)

नये नाटक देखने को मिलता है, तो एक एक्साइटमेंट होता है कि अब आगे क्या होगा. इस सीन के बाद क्या सीन होगा

■ **शिवाशीष मुखर्जी,** यारपुर

पुराने नाटक में कोई क्योरिसिटी नहीं रहती है, पहले से पता होता है कि इसके बाद ऐसा होगा और उसके बाद ऐसा होगा. देखने में बिलकुल भी मजा नहीं आता है.

■ **मुक्ताली मुखर्जी**

पुराने नाटक टाइम पास होते थे, लेकिन इधर नये नाटक देखने के लिए टाइम निकलना पड़ता है क्योंकि उनमें लोगों का इंट्रेस्ट जाग जाता है. उसमें कलाकार भी नये-नये किरदार में नजर आते हैं.

■ **पिंटू**

वार को भामाशाह नाटक का भावपूर्ण दृश्य। ● हिन्दुस्तान

23 वां पटना थियेटर फेस्टिवल संपन्न, आखिरी दिन भामाशाह नाटक का मंचन

फेस्टिवल के आखिरी दिन भामाशाह की दानशीलता मंच पर

पटना | **कार्यालय संवाददाता**

अरावली की झाड़ियां। झाड़ियों के बीच महाराणा प्रताप। बेचैन और हताश महाराणा, आखिर में बोल पड़ते हैं, लगता है राजस्थान की गरिमा अकबर के पैरों के अधीन आनेवाली है। रानी कहती हैं, महाराज, राणा सांगा की कुलवधु होने का मुझे गर्व है...आप इस तरह हताश नहीं हो सकते। आत्मसमर्पण नहीं कर सकते...फिर महाराणा जोश में आ जाते हैं। इसी दृश्य के साथ भामाशाह नाटक का आगाज हुआ। कालिदास रंगालय में सोमवार की शाम इतिहास की बातें मंच पर एक बार फिर जीवंत हुई।

भामाशाह की त्यागशीलता

कहानी यह थी कि महाराणा प्रताप अकबर के कारण जंगल में थे। मेवाड़ की जनता को झुकाने के लिए मुगल सल्तनत ने कूटनीति का सहारा लिया। जासूसों के अनाज खरीद कर बाहर भेजा जाने लगा,

ताकि मेवाड़ में भुखमरी की स्थिति आ जाए। मेवाड़ के धनाढ्य सेठ व देशप्रेमी भामाशाह को इसकी भनक लग गई। उन्होंने खुद अन्न-संग्रह करना शुरू कर दिया, ताकि बाहर अन्न न जा सके। बिहार नाट्यकला प्रशिक्षण के कलाकारों ने डॉ छोटू नारायण सिंह लिखित और उपेंद्र कुमार निर्देशित नाटक को अपने अभिनय से शानदार बना दिया। सतवीर कुमार (महाराणा प्रताप), राजू सिंह (भामाशाह), स्नेहा रानी, सुनीता भारती, उदय कुमार सिंह, कुमार सोनू शंकर, अभिषेक, तेंदुलकर चौहान, शहादत हसन, आशीष राज और अमित का अभिनय प्रशंसनीय था, लेकिन रूप-सज्जा व परिधानों में कुछ कमी थी।

संजय सहाय और नूतन आनंद को सम्मान

हंस पत्रिका के संपादक संजय सहाय और राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित नूतन आनंद को अनिल मुखर्जी शिखर सम्मान 2014 से सम्मानित किया गया। फेस्टिवल के आखिरी दिन जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी के हाथों इन्हें सम्मानित किया गया। शेषांत और टोपी जैसी चर्चित कहानियां लिखनेवाले व कई नाटकों का निर्देशन करनेवाले संजय सहाय तो सम्मान समारोह में जरूर पहुंचे, पर बीमार होने के कारण नूतन आनंद नहीं पहुंच पाई। उनकी जगह उनके प्रतिनिधि ने यह सम्मान लिया। इस अवसर पर डॉ निहोरा प्रसाद यादव, अशोक घोष, अरुण कुमार सिन्हा और गुप्तेश्वर कई लोग उपस्थित थे।

HN

Vadh-Sthal Se Chhalang/Hrishikesh Sulabh (वध-स्थल से छलांग)/हृषिकेश सुलभ

Played Achala: Narrator & A Central Charactor

दैनिक जागरण

जागरण सिटी

हलचल

मरा नहीं है अभी, वह लौट सकता है...

'बीच चौराहे पर एक लड़की के कपड़े खोलने वाले गुंडे, जिसके इशारे पर आए थे। मैंने पूरी साक्ष्य के साथ उसका पता लगा लिया है।' ये कहता है एक पत्रकार, लेकिन आगे क्या होता है? 'पत्रकारिता के सच और कविता के झूठ में बहुत फर्क होता है।' इस संवाद ने बहुत कुछ बयां कर दिया। शुक्रवार की शाम कालिदास रंगालय में मौका था नाटक 'वध स्थल से छलांग' की प्रस्तुति का। कला जागरण के कलाकारों ने दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी। हृषिकेश सुलभ की कहानी 'वध स्थल से छलांग' का नाट्य रूपांतरण कन्हैया ने किया था। निर्देशन सुमन कुमार ने किया।

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन

मूल्यों को बचाने की कहानी

पत्रकारिता के बदलते सरोकारों को केंद्र में रखकर इस नाटक की रचना की गई है। पत्रकारिता के व्यवसायीकरण में एक आदर्शवादी व्यक्तित्व का इंसान किस तरह पिसता है। नाटक का मुख्य पात्र भी अपने मिटते आदर्शों को बचाने के लिए पत्रकारिता छोड़ देता है।

मंच के कलाकार

अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, सरबिंद कुमार, सुनिता भारती, डॉ. शंकर सुमन, नितीश कुमार, अनुप्रिया, ऋषिकांत चतुर्वेदी, सुनील कुमार भगत, सूरज लाल, आमिर हक, रूबेश कुमार, राहुल उपाध्याय, मो. जईम, सुधीर कमल, नीरज बावरिया, कुमारी तान्या, सोनाली सरकार, कुमार चंदन, सत्यजीत कुमार पाठक, सदरुद्दीन, तेजू व शशांक शेखर।

नाटक वधस्थल से छलांग ने उठाए मानवीय संवेदनाओं पर सवाल

DRAMA

डीबी स्टार » पटना

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, एक बेहतर समाज के निर्माण में पत्रकार दिन रात-मेहनत कर योगदान देते हैं लेकिन जनतंत्र के इस रखवाले में भी आज कई खामियां आ चुकी हैं। पूंजी का बढ़ता दबाव इसे अपने उद्देश्यों से भटका रहा है। कुछ इन्हीं बातों को दिखा गया शुक्रवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक वध स्थल से छलांग।

नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से से मंचित यह नाटक हृषिकेश सुलभ का लिखित कहानी पर आधारित था। वहीं इसका निर्देशन किया वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार ने। नाटक में दिखाया गया कि समाज में तीव्र गति से होते बदलाव से पत्रकारिता जगत भी अछूता नहीं है। यह बदलाव सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। बदलते समाज में आज विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर तरह-तरह के खतरे मंडरा रहे हैं। ईमानदारी से अपने पेशे को ही अपना धर्म मानने वाले पत्रकारों पर लगातार हमले हो रहे हैं। नाटक की कहानी ऐसे पत्रकार रामप्रकाश तिवारी के इर्द गिर्द घूमती है जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों के दुख दर्द को उठाता है। लेकिन बदले में उसे मिलती है संवेदनहीन बन चुके लोगों से मानसिक प्रताड़ना। कदम-कदम पर उसे टकराना पड़ता सत्ता की नुमाइंदगी कर रहे भ्रष्ट लोगों से जो उसकी ईमानदारी का मजाक उड़ाते हैं और काम करने से रोकते हैं। नाटक दर्शकों को झकझोरता है कि आए दिन हमारे आस पास महिलाओं और कमजोर तबके पर अत्याचार होता है इसके बावजूद समाज चुप रहता है। राजनेताओं, पूंजीपतियों और अपराधियों का भ्रष्ट गठजोड़ समाज पर हावी हो एक ईमानदार इंसान की आवाज को दबाता जा रहा है। नाटक में सभी कलाकारों ने उम्दा अभिनय कर दर्शकों को अंत तक नाटक से बांधे रखा।

ये थे कलाकार

- अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, डॉ शंकर सुमन, ऋषिकांत चतुर्वेदी, आमिर हक, मो. जईम, कुमार तान्या, सरबिंद कुमार, नीतिश कुमार, सुनील कुमार भगत, रुबेश कुमार, सुधीर कमल, सोनाली सरकार, सुनिता भारती, अनुप्रिया, सूरज लाल, राहुल उपाध्याय, नीरज बावरिया, कुमार चंदन, सत्यजीत कुमार पाठक, मो. सदरुद्दीन, विवेक कुमार, तेजू, शशांक आदि।

कालिदास रंगालय, नाटक वध स्थल से छलांग का मंचन करते कलाकार।

Scenes From the 1st Show

Vadh-Sthal Se Chhalang/Hrishikesh Sulabh (वध-स्थल से छलांग)/हृषिकेश सुलभ

Played Achala: Narrator & A Central Charactor

2nd Show

पत्रकारिता के मकसद पर सवाल

कला जागरण की ओर से 'वध स्थल से छलांग' नाटक का मंचन रविवार को कालिदास रंगालय में किया गया। हृषिकेश सुलभ की कहानी का नाट्य रूपांतरण कन्हैया ने किया है। नाटक में बताया गया है कि पत्रकारिता जब शुद्ध व्यवसाय बन जाती है, तब वह पत्रकारिता नहीं रह जाती है। नाटक का निर्देशन सुमन कुमार ने किया।

कालिदास रंगालय में नाटक 'वध स्थल से छलांग' का मंचन करते कलाकार।

नाटक की कहानी

सवेरा टाइम्स का संपादक पूंजीपतियों और पूर्व सत्तासीन दबंगों का प्रतिनिधि बन कर आता है और स्थापित परंपरा को खत्म कर देता है। इससे अपने लोगों के लिए वह अखबार का इस्तेमाल कर सके। समाज के दबे कुचले लोगों के लिए रामप्रकाश आवाज उठाते हैं, पर उन्हें संपादक के कहर का शिकार होना पड़ता है। एक लड़की को उसके बूढ़े बाप के सामने नंगा किया जाता है, जिससे वो अपनी जमीन को दबंगों को बेच सके। शहर की तीन लड़कियों का अपहरण भी नेताओं के लिए किया जाता है। संपादक ऐसी खबरों को छापने से इंकार कर देता है। अंत में संपादक बदल जाता है। खुश हो जाते हैं। इस प्रकार लोगों की जीत होती है।

नाटक में संपादक का अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, सूर्यनारायण का डॉ. शंकर सुमन, रामप्रकाश का सरबिंद कुमार, बूढ़ा का मिथलेश कुमार, नगमा की भूमिका में विभा सिन्हा व अन्य कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच परिकल्पना प्रदीप गांगुली, रुप सज्जा विनय कुमार और प्रकाश परिकल्पना राजकुमार शर्मा की थी।

लाइव फटाफट

रविवार को 'वधस्थल से छलांग' नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

सच की पड़ताल में झेलनी पड़ी यंत्रणा

पटना। सच की पड़ताल में एक कलमकार राम प्रकाश तिवारी को यंत्रणा का शिकार होना पड़ता है। उसकी नौकरी भी जाती रही। अखबार ने उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया। यह कहानी हिन्दी नाटक 'वधस्थल से छलांग' की है। कला जागरण की ओर से सुमन कुमार के निर्देशन में रविवार की शाम कालिदास रंगालय में इसका मंचन किया गया। नाटक में पत्रकारिता के क्षेत्र में आए अवमूल्यनों पर रोशनी डाली गयी है। इसमें संपादक की भूमिका में अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, रामप्रकाश तिवारी के किरदार में सरबिंद कुमार, सूर्यनारायण की भूमिका शंकर सुमन ने निभायी है। अन्य किरदारों में नीतीश कुमार, सुनीता भारती, रूबी खातून, मिथिलेश सिन्हा, सुधीर कमल, विभा सिन्हा हैं।

ईमानदार कलमकार का भ्रष्ट तंत्र में लगानी पड़ती है छलांग

कालिदास रंगालय में नाटक वध स्थल से छलांग का मंचन।

पटना • डीबी स्टार

नाटक वध स्थल से छलांग पत्रकारिता के भ्रष्ट तंत्र में एक ईमानदार कलमकार की यंत्रणा को मुखर करता है। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, एक बेहतर समाज के निर्माण में पत्रकार दिन रात-मेहनत करते हैं। लेकिन पैसे के मोह में जनतंत्र के इस रखवाले में आज कई खामियां आ चुकी हैं। पत्रकारिता अपने मूल उद्देश्य से भटकता जा रहा है। रविवार को नाट्य संस्था कला जागरण के कलाकारों ने कालिदास रंगालय में नाटक वध स्थल से छलांग का मंचन किया। हृषिकेश सुलभ लिखित कहानी का निर्देशन किया सुमन कुमार। नाटक की कहानी ऐसे पत्रकार रामप्रकाश तिवारी के इर्द-गिर्द घूमती है जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों के दुख-दर्द को उठाता है। वह महिलाओं और कमजोर तबके पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद करता है लेकिन राजनेता, पूंजीपति और अपराधी उसकी आवाज दबा देते हैं।

ये थे कलाकार

डॉ. शंकर सुमन, मिथिलेश कुमार सिन्हा, आमिर हक, मो. जईमउद्दीन, यूरेका, नीतीश कुमार, रूबेश कुमार, आशीष राज, सुधीर कमल, विभा सिन्हा, सुनीता भारती, रूबी खातून, सूरज लाल, राहुल उपाध्याय, अमित, कुमार चंदन।

Sadgati / Premchand (सद्गति/प्रेमचंद) Played Daughter of Protagonist

कालिदास रंगालय में प्रेमचंद्र की कहानी पर आधारित नाटक 'सद्गति' की हुई प्रस्तुति।

पंडितजी शादी का मुहूर्त कब निकालेंगे...

पटना | वरीय संवाददाता

पंडितजी हमारी बेटी की शादी करनी है। आपसे बड़ा पंडित कौन है यहां। पंडितजी हमरी बेटी की शादी के लिए आप बढ़िया से बढ़िया मुहूर्त निकाल दीजिए ना। आप मुहूर्त निकालिएगा तो हमर बेटी शादी के बाद खूब सुखी रहेगी। हां-हां दुखिया जरूर निकालेंगे। पर पहले जरा इ काम सब तो निबटा लो।

कालिदास रंगालय में गुरुवार की शाम यह संवाद पंडित घासीराम व दुखिया के बीच चल रहा था। मुंशी प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'सद्गति' पर आधारित नाटक का मंचन हो रहा था। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर बिहार आर्ट थिएटर की ओर से आयोजित दो दिवसीय नाट्य समारोह इस नाटक के मंचन के साथ संपन्न हुआ। शाम 7 बजे हॉल दर्शकों से भर चुका था। प्रेमचंद की कहानी होने के कारण दर्शकों में नाटक को लेकर काफी उत्साह दिखा। हर

नाटक का मंचन

- दो दिवसीय नाट्य उत्सव का समापन
- कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थिएटर का आयोजन

बेहतरीन संवाद पर हॉल तालियों से गूंज रहा था। पर्दा उठने के बाद मंच पर पं. घासीराम के घर का दृश्य नजर आया। गांव का दलित दुखिया पंडित के घर पहुंचता है। वह उनसे अपनी बेटी की खातिर मुहूर्त निकालने को कह रहा था। पंडितजी इसकी मजबूरी का खूब फायदा उठाते हैं। दिनभर उससे बेगार करवाते। दुखिया सद्गति को लालायित था। उसकी इच्छा अगले जन्म में ऊंची जाति में पैदा होने की थी। लेकिन भूखे-प्यासे बेगारी करते हुए एक दिन उसके प्राण निकल गए। पंडित की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी अरुण कुमार सिन्हा ने दर्शकों को काफी प्रभावित किया।

1 अगस्त दै० हिन्दुस्तान, पटना

रंगमंच

नाटकः सद्गति
लेखक : प्रेमचंद
नाट्यरूपांतरण : अरुण कुमार सिन्हा
निर्देशक : अजीत गांगुली
प्रकाश : राजकुमार, ध्वनि :उपेन्द्र कुमार, रूपसज्जा : सुनील कुमार
प्रस्तुति प्रभारी :प्रदीप मांगुली
पात्र-परिचय
पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा
पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव,
दुखिया : मो.आसिफ इकबाल,
दुखिया की बेटी : सुनीता भारती,
चिखुरी : उमेश कुमार

बढ़िया मुहूर्त निकलवाने को बेगारी करता था दुखिया

पटना | वरीय संवाददाता

कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थिएटर की ओर से स्व. अजीत गांगुली की स्मृति में शिक्षक दिवस के अवसर पर गुरुवार को हिन्दी नाटक 'सद्गति' का मंचन हुआ। बिहार आर्ट थिएटर की यह प्रस्तुति मुंशी प्रेमचंद की रचना पर आधारित थी। पिछले माह भी इस नाटक का मंचन यहां हुआ था।

नाटक शुरू होता है और मंच पर दुखिया नजर आता है। वह पंडित घासी राम के घर के बाहर खड़ा था। वह उनसे अपनी बेटी की खातिर मुहूर्त निकालने को कह रहा था। पंडितजी हमारी बेटी की शादी करनी है। आपसे बड़ा पंडित कौन है यहां। हमरी बेटी की शादी के लिए बढ़िया मुहूर्त निकाल दीजिए। हां-हां दुखिया निकालेंगे। पर पहले जरा इ काम सब तो निबटा लो। पंडितजी इसकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। दिनभर उससे बेगार करवाते। दुखिया सद्गति को लालायित था। उसकी इच्छा अगले जन्म में ऊंची जाति में पैदा होने की थी। लेकिन बेगारी करते हुए उसके प्राण निकल गए।

शिक्षक दिवस पर नाट्य शिक्षक स्व. अजीत गांगुली की स्मृति में बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति 'सद्गति' नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

रंगमंच

नाटक : सद्गति
लेखक : प्रेमचंद
नाट्यरूपांतरण : अरुण कुमार सिन्हा
निर्देशक : स्व.अजीत गांगुली
प्रकाश : राजकुमार, ध्वनि :उपेन्द्र कुमार, रूपसज्जा : सुनील कुमार
प्रस्तुति प्रभारी :प्रदीप गांगुली
पात्र-परिचय
पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा, पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव,
दुखिया : मो.आसिफ इकबाल,
दुखिया की बेटी : सुनीता भारती,
चिखुरी : उमेश कुमार

अंधविश्वास ने ले ली गरीब दुखिया की जान

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

नाटक मंचन

मुंशी प्रेमचंद ने अंधविश्वास से जुड़ी कई कहानियां लिखीं है. उन्हीं से एक कहानी है 'सद्गति', जिसका मंचन गुरुवार को कालिदास रंगालय में किया गया. नाटक में दिखाया गया है कि पुराने जमाने के लोग जब शादी का मुहूर्त निकालने ब्राह्मण के पास जाते थे, तो बदले में उन्हें काम करना पड़ता था.

अकसर छोटी जाति के लोगों को ऊंची जाति के लोग परेशान किया करते थे.

पंडिताइन अपने पति को समझाती हुई कि मजबूर का फायदा उठाना गलत है.

कलाकार :

- पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा
- पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव
- दुखिया : आसिफ इकबाल
- चिखुरी : उमेश कुमार
- बेटी : सुनीता भारती

इस भावुक नाटक का निर्देशन स्वर्गीय अजीत गांगुली ने किया था. नाटक के प्रस्तुति प्रभारी प्रदीप गांगुली और नाट्यकार अरुण कुमार सिन्हा थे.

सद्गति : नाटक एक चमार जाति के दुखिया पर केंद्रित है, जो अपनी बेटी की शादी का मुहूर्त निकालने के लिए पंडित के घर जाता है. बदले में शातिर पंडित चाहता है कि वह उसके घर का सारा काम कर दे. दुखिया घर का सारा काम करना शुरू कर देता है. पहले तो पंडित घासीराम उससे घर की साफ-सफाई करवाता है, फिर उसे पोंछा लगाने को कहता है. हद उस वक्त हो जाती है जब पंडित एक लकड़ी को काटने के लिए कहता है. पंडित की इस मनमानी को देख कर दुखिया कहता है कि मैं अपनी बेटी को घर पर छोड़ आया हूं. फिर भी पंडित के मुहूर्त नहीं निकालने पर वह दमा का मरीज दुखिया लकड़ी काटने चला जाता है. काम ज्यादा करने से उसकी मृत्यु हो जाती है और पंडित उसे खेत में ले जा कर फेंक देता है.

Kabira Khada Bajar Me / Bhishma Sahani (कबीरा खड़ा बजार में/भीष्म साहनी)

Played Mother of Protagonist

कालिदास रंगालय में 'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक की प्रस्तुति

न धर्म और न ही जात है कबीरा की

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

झीनी झीनी बीनी चदरिया. काहे
का ताना, काहे की भरनी.
कौन तार से बीनी चदरिया.
इंगला-बिंगला ताना मानी.
सुसमिन तार से बीनी चदरिया.
सुर-नर-मुणि सब ने ओढ़ी.
ओढ़ के मैली कीनी चदरिया.
दास कबीर जतन ने ओढ़ी, ज्यों
के त्यों रहन दीनी चदरिया.

लेखक भीष्म साहनी द्वारा लिखित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' के इस गीत का काफी महत्व है. गीत से ही कहानी का सार समझ आता है. दरअसल यह एक गीत नहीं, बल्कि कबीर द्वारा कहा गया एक दोहा है. कालिदास रंगालय में बिहार नाट्य कला प्रशिक्षणालय (बैट) द्वारा इस नाटक की प्रस्तुति हुई. सुमन सौरभ द्वारा निर्देशित इस नाटक द्वारा लेखक कहना चाहते हैं कि कबीर की न कोई जात थी, न कोई धर्म. इस कारण ही कबीर जन के बीच में रहते थे. सबके चहेते थे. शासकों ने हमेशा जात-धर्म के नाम पर लोगों को लड़ाया है. नाटक शिक्षक दिवस के मौके पर

मंच पर कलाकारों ने खूब जमाया रंग

हुआ. बैट के शिक्षक और स्टूडेंट्स द्वारा प्रस्तुत नाटक की शुरुआत कबीर के जन्म-कथा के रहस्योद्घाटन के साथ होती है. वे एक विधवा ब्राह्मणी की नाजायज औलाद थे, जिसे एक जुलाहा दंपत्ति नीरू और नीमा ने पाला-पोषा था. यह जानने के बावजूद कि नीमा उनकी सगी मां नहीं है, कबीर के मां के प्रति प्रेम में कमी नहीं आती. कबीर मुल्ले और पंडित के दुश्मन बन जाते हैं, क्योंकि कबीर की वाणी किसी को बख्शती नहीं है. कबीर अकसर अपमान सहते हैं, धमकियां सुनते हैं, लेकिन सच और खरी बात करने से नहीं चूकते हैं. वे गलियों और नुक्कड़ों पर अपने मित्रों के संग सत्संग करते हैं और भजन करते हैं, जो पंडितों और मौलवियों को अच्छा नहीं लगता है.

इसी बीच दिल्ली के सुलतान सिकंदर लोदी बिहार फतह के बाद लौटते हुए दो दिनों के लिए काशी में पड़ाव करते हैं और कोतवाल से कहते हैं कि कबीर से मुलाकात करनी है. लोदी कबीर से मिलता है और बात करता है. सिकंदर लोदी कबीर से उसका मजहब पूछते हैं. कबीर का जवाब होता है, 'एक निरंजन अल्लाह मेरा. हिंदू तुर्क दुई नहीं मेरा'. यह सुन कर सिंकदर लोदी नाराज हो जाता है और कबीर को नगर से निकलवा देता है.

इनकी अदाकारी बेहतरीन

नाटक में कुछ ही सीन के लिए आये बैट के शिक्षक अरूण सिन्हा, कबीर उदित कुमार, कोतवाल बने इरफान समेत शंकर सुमन, सुनिता भारती, राजू कुमार, रणविजय सिंह, अजीत कुमार, सत्येन्द्र, ज्ञान प्रकाश, मुन्ना रॉय, अमरदीप, प्रवीण, विशाल वैभव, सुजीत ने भी बहुत अच्छी अदाकारी की.

अब आ रहा है डिजाइनिंग पर ओलिंपियाड

पटना . साइंस ओलिंपियाड, मैथ्स ओलंपियाड तो आपने बहुत सुने होंगे, लेकिन अब आने वाला है डिजाइन से संबंधित ओलिंपियाड. स्कूल के स्टूडेंट्स को अपनी फैशन डिजाइनिंग में प्रतिभा निखारने का यह मौका फैशन इंस्टीट्यूट के स्टूडेंट्स ही दे रहे हैं. दरअसल कंट्रीयूथ प्राइवेट लिमिटेड की इकाई 'डिजाइन क्वेस्ट' डिजाइन के क्षेत्र में 'डिजाइन स्कूलर्स' के नाम ओलिंपियाड आयोजित कर रही है. इसमें क्लास 6 से क्लास 12 तक के स्टूडेंट्स को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रचनात्मक हुनर दिखाने का मौका मिलेगा. यह मंच स्कूल से लेकर जिला स्तर और वहां से बढ़ते हुए राज्य स्तर पर अपनी छाप छोड़ते हुए डिजाइन और फैशन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर की एक बड़ी टीम की रचना करेगा. यह टीम अंत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रौशन करेगी.

यह मंच निफ्ट और नीड के ग्रेजुएट स्टूडेंट्स की टीम द्वारा संचालित किया जायेगा. इसके लिए रजिस्ट्रेशन फॉर्म डिजाइन क्वेस्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं. यह अनोखा ओलिंपियाड बिहार और झारखंड के स्टूडेंट्स के लिए हो रहा है और इसमें किसी भी स्कूल के स्टूडेंट्स भाग ले सकते हैं.

जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय

बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति सुमन सौरभ निर्देशित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' का मंचन

भास्कर न्यूज़ | पटना

दुख में सुमिरन सब करे सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोय तू फूल,
तोहि फूल को फूल है वाको है तिरसुल।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर,
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

कबीर दास के ये दोहे शुक्रवार की शाम कालिदास रंगालय में गाए जा रहे थे। हर दोहा जीवन के गहरे दर्शन को अपने में समेटे था, जो कि चंद शब्दों में ही बहुत बड़ी बात कह रहा था। यह सब हो रहा था यहां बिहार आर्ट थियेटर की ओर से मंचित और सुमन सौरभ निर्देशित नाटक कबीरा खड़ा बाजार में के मंचन के दौरान। नाटक में कबीर के दोहों की गीत और संगीत के साथ शानदार प्रस्तुति दी गई। इस संगीतमय नाटक में कबीर के विचारों को मंच पर उतारा गया। नाटक में कबीर के जीवन के विभिन्न हिस्सों को दिखाया गया। कबीर के बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की पूरी यात्रा को नाटक के जरिये मंच पर उतारा गया। नाटक में कबीर के समय के समाज की परिस्तिथयों, उस समय की सामाजिक कुरातियों घर-घर फैले अंधविश्वास को भी दिखाया गया।

निर्देशक- सुमन सौरभ।
कलाकार- उदित, अमरदीप कुमार, इरफान अहमद, राजू कुमार, डॉ शंकर सुमन, सुनीता भारती, दिव्या।

कालिदास रंगालय में कबीरा खड़ा बाजार नाटक का प्रभावपूर्ण तरीके से मंचन करते कलाकार।

Kadambini / Ravindranath Tagore (कादम्बिनी/रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

Played Kadambini: the Protagonist

यहां जीवित होने का देना पड़ता है सबूत

नाटक 'कादंबिनी'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित कहानी कादंबिनी काफी चर्चित कहानी है. इसमें यह बताया गया है कि एक अकेले इनसान द्वारा कही बातों का कोई विश्वास नहीं करता है. चाहे वह अपने जीवित होने का प्रमाण ही क्यों न दे. कालिदास रंगालय में बुधवार से शुरू हुए उत्सव मौसम 2014 के पहले दिन इसी नाटक का मंचन हुआ. यूं तो यह नाटक पहले भी हो चुका है, लेकिन इस बार कुछ अलग कलाकारों ने नाटक में अभिनय किया. बिहार आर्ट थियेटर के चार कलाकारों को छोड़ सभी कलाकार नये थे. नाटक का निर्देशन अशोक कुमार घोष ने किया. दर्शकों ने 20 रुपये का टिकट लेकर नाटक देखा.

नाटक मंचन

यह थी कहानी

कादंबिनी एक जमींदार परिवार की विधवा बहू रहती है. वह अचानक एक दिन बेहोश हो जाती है. बेहोश कादंबिनी को मरा हुआ समझ कर जमींदार शारदा शंकर रातों-रात उसका दाह-संस्कार कराने के लिए अपने आदमियों के हाथों उसके शरीर को शमशान घाट भिजवा देता है. कादंबिनी का कोई नहीं होता है, फिर भी शारदा उसका दाह-संस्कार खुद नहीं करता है. वह सोचता है कि कहीं लोगों को शक न हो जाये कि उसकी हत्या कर दी गयी है. शमशान घाट पर लाश के रूप में लायी गयी बेहोश कादंबिनी को होश आ जाता है. लोग उसे भूत समझने लगते हैं. कादंबिनी खुद को जीवित समझाने के लिए काफी ज्यादा कोशिश करती है, लेकिन वह नाकाम रहती है. अंत में वह नदी में कूद कर अपने प्राण त्याग देती है. उसके बाद लोगों को समझ आता है कि वह भूत नहीं थी. इस नाटक में सुनीता भारती, आलोक गुप्ता, कनिज फातिमा, शांतनु, निक्की सिंह, राजू सिंह, रंजन कुमार, राजेश कुमार सिन्हा, नीतिश कुमार, प्रवीण कुमार आदि ने अभिनय किया.

DB स्टार . PATNA

जान देकर देना पड़ा जिंदा होने का सबूत

DRAMA

कालिदास रंगालय में नाटक के मंचन का एक भावपूर्ण दृश्य।

डीबी स्टार » पटना

आप कैसा महसूस करेंगे जब आप जिंदा हो और लोग आपके जिंदा होने पर ही सवाल उठाने लगे। एक अच्छे भले इंसान को समाज भूत मान ले यह स्थिति जितनी हास्यप्रद है उतनी दुखदायक। कुछ ऐसी ही परिस्थितियां बुधवार को दिखी कालिदास रंगालय में मंचित हुए नाटक कादम्बनी में, जिसकी मुख्य पात्र कादम्बनी को अपने जिंदा होने का सबूत देने के लिए मौत को गले लगाना पड़ा। जब तक वह जिंदा थी और चीख-चीख कर खुद के जीवित होने की बात कह रही थी तो किसी को उस पर यकीन नहीं हो रहा था और सब उसे मृतक की आत्मा समझ रहे थे।

नाटक कादम्बनी का मंचन कालिदास रंगालय में बिहार के प्रसिद्ध फिल्मकार गिरिश रंजन की याद में बुधवार से शुरू हुए चार दिवसीय नाट्योत्सव के पहले दिन हुआ। रवीन्द्र नाथ ठाकुर की लिखी कहानी और बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति इस नाटक के निर्देशक थे अशोक घोष वहीं इसके नाट्य कार थे अरूण कुमार सिन्हा।

पश्चिम बंगाल की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक की कहानी बाल विधवा कादम्बनी के इर्द-गिर्द घूमती है। कम उम्र में ही उसकी शादी जमींदार परिवार में हो जाती है और शादी के कुछ ही समय के बाद पति का निधन भी हो जाता है। पति की मौके के बाद वह ससुराल में जेठ और जेठानी के साथ रहती है। जेठ का छोटा [illegible] चाची के पास रहता है।

एक दिन अचानक कादम्बनी की तबियत खराब होती है और वह बेहोश हो जाती है। ससुराल वाले उसे मरा हुआ समझ लेते है और पुलिस के डर से जल्दी जल्दी रात में ही उसका अंतिम संस्कार करने के लिए श्मशान भेज देते हैं। उसकी अर्थी को जमींदार के नौकर श्मशान जाते हैं। वहां जब अर्थी रखी जाती है तो कादम्बनी उठ खड़ी होती इसे देख नौकर भूत समझ भाग खड़े होते हैं। कादम्बनी खुद को श्मशान में पाकर परेशान हो जाती है उसे खुद समझ में नहीं आता कि वह जिंदा है या मर चुकी है। यहां से वह ससुराल न जाकर अपने बचपन की सहेली योगमाया के घर चली जाती है। सहेली अपने पति से आज्ञा लेकर उसे अपने यहां पनाह देती है। कुछ दिनों बाद योगमाया को अपने पति पर कादम्बनी को लेकर शक होने लगता है कि उसका पति कादम्बनी को ओर आकर्षित हो रहा है। इसके बाद वह उसे अपने घर से निकाल देती है, इस पर कादम्बनी रोते हुए अपने ससुराल पहुंचती है। ससुराल में जाकर अजीब संकट का सामना करना पड़ता है, वहां सब उसे कादम्बनी की आत्मा समझने लगते हैं और जिंदा मानने से इंकार कर देते है। ससुराल वालों के व्यवहार से आहत होकर कादम्बनी अपने जिंदा होने का सबूत देने के लिए तालाब में डूब कर अपनी जान दे देती है। उसके मरने के बाद लोगों को [illegible]

PIC: I NEXT

दिलजीत परफॉर्मेंस

रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी कादम्बिनी को अरुण कुमार सिन्हा ने कालिदास के रंगालय में इस कदर पेश किया कि दर्शक देखकर दंग रह गए. बेहतर अभिनय पेश कर दिल जीत लिया.

जब लगती है पांचू की लौटरी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

बंगाल के लेखक नाटककार शंभू मित्र एवं अमित मित्र लिखित नाटक 'कांचनरंग' का मतलब होता है सोने का रंग. कालिदास रंगालय में बुधवार को प्रस्तुत नाटक हास्य शैली में दिखाया गया. इसमें दिखाया गया कि सोने (धन) का लालच आदमी को किस प्रकार खुद के विवेक से भटका देता है.

नाटक का मुख्य किरदार पांचू एक सीधा-साधा मंदबुद्धि इनसान है. एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार के मुखिया यदु गोपाल बाबू के घर में वह रहता है. यदु गोपाल के दो बेटे हैं अमर और समर. दोनों ही फैशनपरस्त और बेकार होते हैं. एक बेटी है सीमा, जो किसी मिलन नाम के लड़के के प्रेम में है. यदु गोपाल बाबू दूर के रिश्ते से पांचू के मौसा लगते हैं और पांचू को गांव से इसलिए ले आये हैं कि बगैर पगार के रुखी-सूखी खाकर घर का सारा काम काज करे.

नाटक मंचन

नाटक में हर सीन के साथ चलनेवाला म्यूजिक नाटक को काफी बेहतरीन बना देता है. पांचू का किरदार कर रहे अशोक घोष की एक्टिंग काफी सराहनीय थी. उनकी मंदबुदि्ध के एक्टिंग पर अंत तक तालियां बजती रहीं.

कहानी में उस वक्त मोड़ आता है, जब पांचू को सवा लाख रुपये की लॉटरी मिलती है. परिवार का हर सदस्य उससे अपनापन जताने लगता है और उसके लॉटरी के रकम से अपने सपनों को साकार करने की कोशिश में लग जाता है. यहां तक कि पांचू को घर का दामाद बनाने का भी फैसला ले लिया जाता है. इधर पांचू का भी मिजाज सातवें आसमान पर होता है, लेकिन तभी खबर आती है कि लॉटरी पांचू को नहीं मिली. फिर क्या था, परिवार के सभी सदस्य गिरगिट से भी जल्दी अपना रंग बदल लेते हैं. पांचू को उसकी औकात बता कर लात-जूते से उसकी खबर लेना शुरू कर देते हैं. ठीक उसी वक्त अचानक टेलीग्राम आता है कि लॉटरी का विजेता पांचू ही है, पहली खबर गलत थी. उस वक्त घर वालों को सांप सूंघ जाता है.

नाटक में सभी को सबसे ज्यादा पांचू का किरदार पसंद आया.

पात्र-परिचय

■ पांचू : अशोक घोष ■ यदु गोपाल बाबू (गृहस्वामी) : उमेश कुमार ■ गृहस्वामिनी : सविता श्रीवास्तव ■ तरला : सुनीता भारती ■ सीमा : उज्ज्वला गांगुली ■ महिला (किरायेदार) : चंदना घोष ■ बट्टू : सुनील ■ चित्तो बाबू : उमंग ■ अमर : आशीष राज ■ समर : धीरज कुमार ■ फिल्म डायरेक्टर : अजय श्रीवास्तव

Gharjamai / Premchand (घरजमाई /प्रेमचंद) Played mother of protagonist

प्रेमचंद हमारे रोल मॉडल बन सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के मो.अजीमुद्दीन ने अभिनय किया। मिश्र सहित कई लोग उपस्थित थे। सहित कई लोग उपस्थित थे।

'घरजमाई' ने खूब किया मनोरंजन

पटना | कार्यालय संवाददाता

मेहरारू नहीं ब्लडप्रेशर की दुकान थी...चमक कर चलती थी...झमक कर बोलती थी...खखुआती थी, झंझुआती थी अउर बबुआ बेचारे माथा पीटते रह जाते थे...ज्यादा चांव-चांव करते थे तो सास, सरहज भी हहुआ के टूट पड़ती थी...अउर बबुआ बेचारा पाहुना बन कर रह जाते थे...यह सब देख दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो रहे थे। कालिदास रंगालय में 'घरजमाई' नाटक ने लोगों का खूब मनोरंजन किया।

प्रेमचंद जयंती पर प्रेमचंद लिखित कहानी को बैट के कलाकारों ने गुरुवार को भोजपुरी में मंचित किया। अरुण कुमार सिन्हा के निर्देशन में कलाकारों ने अपने अभिनय से आखिर तक दर्शकों को बांधे रखा।

प्रयोग नहीं कहानी पर जोर

बैट यानी बिहार आर्ट थियेटर कहानी प्रधान नाटकों की प्रस्तुति के लिए जाना जाता है और गुरुवार को भी ऐसा ही दिखा। नाटक में पूरा जोर कहानी पर था। न तो लाइट-साउंड के लेकर कोई प्रयोग था और न ही मंच को लेकर। पर नाटक दर्शकों को बांधने में सफल रहा। गंवई संस्कृति कैसी होती है और गांव के लोग कैसे बतियाते हैं, घरजमाई बना युवक कैसे ससुराल में उपेक्षित होता है और आखिर में कैसे अपने गांव लौट आता है, इसको बड़े ही सधे हुए अंदाज में मंच पर उतारा गया। शुक्रवार को ईदगाह नाटक का मंचन होगा।

प्रेम प्रदर्शन... बैट के कलाकारों ने प्रेमचंद की कृति घरजमाई का दृश्य।

इनका रहा शानदार अभिनय

रविभूषण- हरिघन(घरजमाई), अनीता कुमारी- गुमानी (हरिघन की पत्नी), उज्वला गांगुली (सास), अरविंद कुमार, अनीता कुमारी वर्मा, सुनीता भारती, रानू, अभिषेक, सुदीप, उमेश, अमित, दीपक, सिद्धिश्री, फातिमा, आसिफ इकबाल, रंजन,मदन, शांतिप्रिया, प्रवीण, सुजीत, शांतनु और अरुण।

आज

पटना महानगर

मुंशी प्रेमचंद की रचना समुद्र के समान : मंत्री

(आज समाचार सेवा)

पटना। मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री बिनय बिहारी ने प्रेमचंद रंगशाला में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि किसी लेखक के विषय में सब कुछ समझ जाना कोई कम बड़ी बात नहीं है। मुंशी जी की रचना एक समुंदर के समान है, जिसे समझना आसान भी है और कठिन भी है। जो जितना डूबकी मारेगा, उतरा मोती पायेगा। उन्होंने प्रेमचंद की रचनाओं का अपने ऊपर पड़े प्रभाव का जिक्र करते हुए कहा कि पंच परमेश्वर की एक पंक्ति कि-'क्या बिगाड़ की डर से ईमान की बात नहीं कहोगे'-हमेशा याद रखता हूं। विद्वान ही विद्वान की कद्र करता है। मैंने मुंशी प्रेम को आत्मसात किया है। उन्होंने देश के सामने उपस्थित नैतिक संकट के इस दौर में प्रेमचंद की रचनाओं को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना। इस अवसर पर विधान पार्षद डा. रामवचन राय ने पंडित जनार्दन झा द्विज ने उनके पाण्डलिपि का प्रकाशन पुर्व-सम्पादन दिया। संचालन सोमा चक्रवर्ती ने किया

प्रेमचंद रंगशाला में जयंती पर कफन का मंचन

प्रेमचंद के बहाने 'घरजमाई'

(आज समाचार सेवा)

पटना। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्दकी जयन्तीके अवसरपर बिहार आर्ट थियेटर का द्विदिवीय नाट्य प्रस्तुतिका आरंभ अरुण कुमार सिन्हा लिखित एवं निर्देशित भोजपुरी नाटक घरजमाई की प्रस्तुति से हुआ।

नाट्य प्रस्तुतिका उद्घाटन दीप जलाकर आपूर्ति विभागकी ओएसडी प्रतिभा सिन्हा, साहित्यकार अमियनाथ चटर्जी बैठके निहोरा प्रसाद यादव एवं डा. शंकर प्रसादने किया।

नाटककी कथा वस्तु घरजमाईके जीवनका सत्य उद्घाटित करती है। इसमें घरजमाई बनना, ससुरालका जीवन और अंतत: घरजमाईके बन्धनसे आजाद होनेकी स्थितिको व्यक्त किया गया है। नाटकको मंचपर साकार किया-हरिधन घरजमाईकी मुख्य भूमिकामें रविभूषण सहित अनीता कुमारी वर्मा, उज्जवला गांगुली, अरविन्द कुमार, सुनीता भारती, रानू, अभिषेक रंजन, सुदीप कुमार, उमेश कुमार, अमित कुमार सिन्हा दीपक मिश्रा, दीपक कुमार, अनीता कुमारी, सिद्धि श्री फातिमा, आसिफ इकबाल, रंजन कुमार, मदन कुमार, शांतिप्रिया, प्रवीण कुमार, सुजीत कुमार शर्मा, शांतनू एवं अरुण कुमार ने।

नाटकमें गीत एवं संगीत संयोजन गुप्तेश्वर कुमारने किया। मंच परिकल्पना प्रदीप गांगुली, रूप सज्जा अशोक घोषने किया। उमेश पासवान और अमित सिन्हा नाटकके गीतकार हैं। सहायक निर्देशन अभिषेक रंजन एवं सुदीप कुमारने किया। नाट्य प्रस्तुति कुमार अनुपमने किया। नाट्य प्रेमियोंने आरंभसे अंत तक रोचक संवादोंका आनन्द उठाया।

प्रेमचंद के बिना हिन्दी साहित्य गरीब : रामवचन

(आज समाचार सेवा)

पटना। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की धरोहर है। यदि वे नहीं होते, तो हिन्दी भाषा साहित्य के बिना काफी गरीब होती। वे हिन्दी भाषा ही नहीं, राष्ट्र के गौरव हैं। यह कहना है बिहार विधान परिषद् सदस्य प्रो. (डा.) रामवचन राय का। वे बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। कहा कि जब वे मिर्जापुर में स्कूल के शिक्षक थे, तब छात्रों के साथ फुटबाल खेला करते थे। वे प्राय: छात्रों का मनोबल बढ़ाया करते थे। वे अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन में काफी सक्रिय रहे। उनकी तुलना प्राय: चीन के उनके समकालीन लेखक लू शुन से की जाती रही है। वे किसान चेतना के लेखक थे। शुरू में वे गांधीवाद के प्रभाव में रहे। बाद में उनका झुकाव मार्क्सवाद की तरफ हुआ। उनकी अंतिम कहानी 'कफन' एवं अंतिम उपन्यास 'गोदान' का अतिक्रमण साहित्य की दृष्टि से अभी तक किसी रचना ने नहीं किया है। उन्होंने भाषा की बेहतरीन मिसाल हमारे सामने रखी। हिन्दी पत्रकारिता ने भी उनकी बोधगम भाषा को अपनाया। वे कालजयी रचनाकार थे। आनेवाली पीढ़िया सदैव उनसे प्रेरित होती रहेंगी। भवन निर्माण एवं कला संस्कृति विभाग के सचिव चंचल कुमार ने विश्वविद्यालयों के शोधार्थी छात्र-छात्राओं से अपील की कि वे राष्ट्रभाषा परिषद् के साहित्यिक भंडार एवं समृद्ध विरासत का लाभ उठायें। उन्होंने आश्वासन दिया कि युवाओं को कला-संस्कृति एवं साहित्य से जोड़ने के लिए विभाग द्वारा सक्रियता बढ़ायी जायेगी। कार्यक्रम में हरेराम, प्रो. डा. सुनील कुमार, डा. मिथिलेश कुमारी मिश्र सहित अन्य लोगों ने भी अपनी बातें रखीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. जयकृष्ण मेहता ने की। संचालन ओमप्रकाश पाण्डेय प्रकाश ने किया।

Veergati (वीरगति/नौटंकी शैली) Played Mother of Protagonist

पाया. इस स्कार में अतिरिक्त रनों की संख्या दहाई (10) में थी. टीम सी

एवं टेबल टेनिस खेलों के मुकाबले शुरू हो जायेंगे.

ने कहा कि बजट का स्केलटन तैयार है बस उसे फाइनल रूप देना बाकी है.

दिल्ली रवाना किया जायेगा. ये छात्र गणतंत्र दिवस देखने के अलावा

होगा 'माना कि अंधेरा घना है, लेकिन दीया जलाना कहां मना है'.

आठवां दिन: 25वें पटना थियेटर फेस्टिवल के अंतर्गत मंचित हुआ नाटक

पैसों के बल पर दबा देते हैं गला

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आमतौर पर मन में कई तरह की बातें चलती रहती हैं. लोग एक-दूसरे के कर्मों को कई तरह से देखते हैं. कोई करना कुछ चाहता है और कर कुछ बैठता है और सामने वाला उसे कुछ और समझ लेता है. कुछ ऐसा ही देखने को मिला नाटक वीरगति में, जिसमें नाटक के एक किरदार सुकुमार का मन धन बंटोरना नहीं, बल्कि कुछ और रहता है. नाटक की यह कहानी देखने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर. यहां मंगलवार को 25वें पटना थियेटर फेस्टिव अनिल कुमार मुखर्जी शताब्दी नाट्योत्सव के आठवें दिन निर्माण रंगमंच हाजीपुर द्वारा वीरगति नाटक का मंचन किया गया. यह नाटक दर्शकों को शुरू से लेकर अंत तक पसंद आया. नाटक में कई दृश्यों को देख और एक से बढ़ कर एक डायलॉग्स को सुनते हुए दर्शकों ने भरपूर तालियों से कलाकारों का हौसला बढ़ाया. इस नाटक की परिकल्पना और निर्देशन क्षितिज प्रकाश का था.

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

नाटक की कहानी

सुकुमार तीन साहुकारों के परिवार का एकमात्र वारिस है. उसका मन धन-दौलत को बंटोरने का नहीं करता बल्कि अमीरी-गरीबी को देख उसका हृदय विचलित रहता है. वह हमेशा समाज की भलाई के लिए आगे रहता है. समाज के लिए ही कुछ करना चाहता है, लेकिन सुकुमार का यह विचार साहूकार परिवारों के लिए चिंता का विषय बना रहता है. इसलिए लोग उसकी शादी करा देते हैं, लेकिन शादी के बाद भी उनका मन नहीं लगता है. इसलिए साहूकार परिवार की चिंता और बढ़ने लगती है. इधर सुकुमार राजा के दरबार में जा कर गालियां देता है. लेकिन साहूकार के मंत्री के साथ का विद्रोह उसकी जय-जयकार के शोर में दब जाता है और सक्रिय विरोध का गला पैसों के बल पर घोंट दिया जाता है.

ये थे कलाकार

सुकुमार	: अमित कुमार
राजकुमारी	: रूबी खातून
मां	: सुनीता भारती
साहूकार	: 1. क्षितिज प्रकाश, 2. रवि शंकर पासवान 3. गुलशन कुमार
ठाकुर	: प्रफुल कुमार
महामंत्री	: जिवेश कुमार सिंह
राजा	: उमेश कुमार निराला

शांत मन से पढ़ें, तो होगा बेहतर

पटना. ज्ञान का भंडार खुला हुआ है, लेकिन इसमें गोता लगाने के लिए आपको रीडिंग का तरीका सीखना होगा. अगर रीडिंग स्किल आपने सीख लिया तो किसी से भी रू-ब-रू हो सकते हैं.

यह बातें अमिटी के मार्केटिंग मैनेजर अनिल कुमार पांडेय ने कहीं. वे मंगलवार को श्री अरविंद महिला कॉलेज में अंग्रेजी डिपार्टमेंट द्वारा 'कैसे करें रीडिंग स्किल डेवलप' विषय पर आयोजित परिचर्चा को संबोधित कर रहे थे.

■ श्री अरविंद महिला कॉलेज में 'कैसे करें रीडिंग स्किल डेवलप' विषय पर परिचर्चा आयोजित

कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि हायर एजुकेशन के स्टूडेंट्स को ज्यादा बोलकर नहीं पढ़ना चाहिए. शांत मन से पढ़ाई करने की आवश्यकता है. रीडिंग सीखने पर दुनिया खुली होती है.

वहीं, अंग्रेजी डिपार्डमेंट की एचओडी डॉ सरिता सिन्हा ने छात्राओं को कहा कि रीडिंग समुद्र की तरह है. हमेशा याद रखने के लिए रीडिंग स्किल बेहतर होना चाहिए.

हायर एजुकेशन में बोल कर पढ़ने से रीडिंग की स्पीड कम हो जाती है. इस मौके पर छात्राओं ने सवाल-जवाब भी किया, जिसमें रीडिंग के अनेक टिप्स दिये गये.

---

6 | i next, Patna, 20 January 2016 | www.inextlive.com/patna | CITY EVENTS/CHAI-TIM

How could I not? You defended me for my 'body paint' when most of the world wanted to lynch me! Gratitude. @PoojaB1972

'कालिदास' में सपना रह गया अधूरा

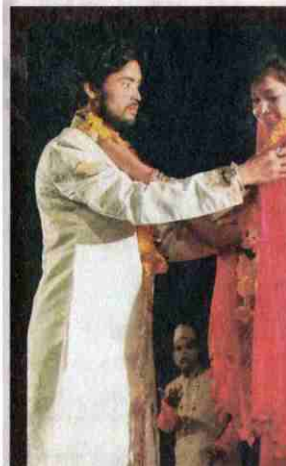

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

patna@inext.co.in

PATNA(19 Jan) : निमार्ण रंग मंच हाजीपुर ने मंगलवार को कालिदास रंगालय में नाटक वीरगति का मंचन किया. निर्देशन विनित प्रकाश ने किया.

अमीरी गरीबी खत्म हो...

सुकुमार तीन धनाध्य साहुकारों में अकेला संतान है. उसका मन धन बटोरने का नहीं है, बल्कि अमीरी गरीबी के फासले को दूर करने का है. मन विचलित है. वह समाज के लिए कुछ करना चाहता है. जिसके चलते उसके पिता काफी परेशान रहते हैं. विवाह के बाद भी उसका मन नहीं लगता. चोरों की पिटाई को देख उन्हें छुड़वा देना. डकैटों को सही रास्ता दिखाता. वो समाज के लिए काम करता है. मगर सफलता नहीं मिलती.

पैसा में बहुत ताकत है....

एक दिन सुकुमार को उसके पिता कहते

PICS: I NEXT

कुछ यूं भी दिखा अभिनय...

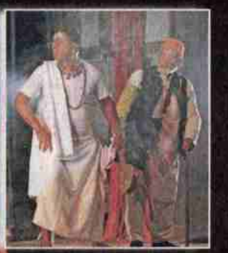

हैं पैसा में बहुत ताकत है. इससे प्रतिष्ठा, यश, माया, विद्या, बल, सत्ता सब खरीद सकते हैं. सुकुमार नजरअंदाज करता है और काम क रहता है. इससे समाज में सुकुमार अलग प्रतिष्ठा मिलती है. राजा के द में चाटुकार महामंत्री से विद्रोह उ जय जयकार की शोर में दब क जाती है. अंत में पैसे के बल पर सुकु का सपना घोंट दिया जाता है. ना में अमित, रूबी, सुनिता, रवि श पासवान, गुलशन, [illegible], जीवेश और उमेश निराला ने अभिनय किय

हर जगह भ्रष्टाचार...

बिहार स्ट्रीट थिएटर अकादमी ने मंगलवार को कालिदास रंगालय में नुक नाटक भ्रष्टाचार महोत्सव का मंचन किया. नाटक का निर्देशन नीरज कुम ने किया. इसमे सरकारी संस्थान में हो रहे भ्रष्टाचार को दिखाया गया.

जागरण सिटी
पटना
पटना, 9 मई 2015

...खो गया मीनू का अल्हड़पन

कालिदास रंगालय में रवींद्र जयंती उत्सव शुरू, पहले दिन नाटक 'मीनू' का किया गया मंचन

'एक नटखट और हठी नारी प्रकृति हमेशा अल्हड़ और जंगल में दौड़ती हिरण की तरह दिखाई देती है। ऐसे चेहरे एक बार देख लेने के बाद भुलाए नहीं भूलते।' ये संवाद मीनू के अल्हड़पन को बखूबी बयां करते हैं। एक लड़की जो दुनिया से बेखबर होती है। कालिदास रंगालय में शुक्रवार से शुरू हुए रवींद्र जयंती उत्सव में 'मीनू' नाटक का मंचन किया गया। बिहार आर्ट थिएटर द्वारा आयोजित इस उत्सव का विधिवत उद्घाटन राज्यसभा सांसद रवींद्र किशोर सिन्हा, जेपी सेनानी सम्मान योजना के सलाहकार परिषद के चेयरमेन मिथिलेश कुमार तथा हैदराबाद के प्रसिद्ध फोटो पत्रकार सत्यनारायण ने मिलकर किया। रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी समाप्ति पर आधारित इस नाटक का नाट्य रूपांतरण अरुण कुमार सिन्हा तथा निर्देशन अशोक घोष ने किया।

स्त्री मन का किया सजीव चित्रण

मीनू एक अल्हड़ लड़की है। उसे दुनियां की कोई परवाह नहीं। वह बड़ी हो गई है, फिर भी बच्चों के साथ खेलती है। उसकी शादी होती है, किंतु उसके स्वभाव में फिर भी कुछ भी बदलाव नहीं आता। तंग होकर उसका पति उसे मायके छोड़ देता है। मीनू बदल जाती है। 'ईश्वर की तलवार ऐसी ही बारीक है। उन्होंने मीनू के बचपन और जवानी के बीच ऐसा वार किया कि उसे पता भी नहीं चल सका। और आज न जाने कैसे उसका बचपन जवानी से अलग जा गिरा।' इस संवाद से इस बदलाव को सहज ही महसूस किया जा सकता है।

कालिदास रंगालय में मीनू नाटक के मंचन के दौरान बिहार आर्ट थियेटर के कलाकार। जागरण

नेपथ्य सहयोग भी रहा बेहतर

नाटक को नेपथ्य से भी बेहतर सहयोग प्राप्त हुआ। गुप्तेश्वर कुमार की प्रकाश परिकल्पना तथा चंदना घोष एवं शशांक घोष की रूप सज्जा को सबने सराहा। मंच परिकल्पना प्रदीप गांगुली की थी । संगीत परिकल्पना मारिया प्रवीण तथा अलका शर्मा ने मिलकर किया। राजकुमार शर्मा, उपेंद्र कुमार, सुजीत कुमार, कृष्णा नायडू, प्रवीण कुमार, हीरा मिस्त्री, सर्फुद्दीन, संजय, बीरबल तथा विनोद अन्य नेपथ्य सहयोगी थे। उद्घोषणा अरूण कुमार सिन्हा तथा सहनिर्देशन रंजन कुमार ने किया। इस अवसर पर कुमार अनुपम, अमीय नाथ चटर्जी, सुमन कुमार, अशोक प्रियदर्शी, डॉ. उषा वर्मा आदि की उपस्थिति प्रमुख थी।

अभिनय एवं निर्देशन ने जीता दिल

नाटक के अभिनय ने दर्शकों को जितना प्रभावित किया उसके निर्देशन का पक्ष भी उतना ही मजबूत दिखा। कलाकारों की बेहतरीन संवाद अदायगी एवं भाव-भंगिमा तथा बेहतर मंच और प्रकाश प्रयोग से नाटक प्रखर होकर दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत हुआ। एक ओर शांति प्रिया ने मीनू के चरित्र को बखूबी निभाया, तो दूसरी ओर दीपांकर शर्मा ने अपूर्व के चरित्र में जान फूंक दिया। अपूर्व की मां की भूमिका में सुनिता भारती के अभिनय को भी दर्शकों ने काफी सराहा। इनके अलावा आलोक गुप्ता, अभिषेक कुमार, अलका शर्मा, श्रेयाण चटर्जी, नीतिश कुमार, मुन्ना कुमार राय, रविकांत चौधरी तथा प्रियांशु कुमार ने भी अपने अभिनय से सबको प्रभावित किया।

रवीन्द्र जयंती पर 'मीनू' का मंचन

पटना (एसएनबी)। रवीन्द्र नाथ टैगोर की 154 वीं जयंती उत्सव पर कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर की ओर से उनकी कहानी 'समाप्ति' पर आधारित नाटक 'मीनू' का मंचन किया गया।

गांव की भोलीभाली नटखट मीनू हमेशा नन्हें लड़कों के संग ही रहती है। अपूर्व की मां की इच्छा न होते हुए भी बेटे के पसंद के कारण मीनू से विवाह करना पड़ता है। विवाह के बाद भी मीनू में कोई परिवर्तन नहीं आता जिसके कारण मां-बेटे मे अनबन होती है। अपूर्व अपनी पत्नी मीनू को उसके मायके में छोड़ शहर चला जाता है। गांव में अपूर्वा की मां और कलकत्ता में बेटा अपूर्व जहां बसने के बावजूद एकाकी महसूस कर रहे होते हैं वहीं मीनू भी अपने मायके में एकाकी हो जाती है। अचानक उसका बालपन मृत हो जाता है और वापस अपने ससुराल पहुंच जाती है। नाटक में मीनू का अभिनय शांति प्रिया, अपूर्व का दीपांकर शर्मा, अपूर्व की मां का सुनीता भारती, दयाल का आलोक गुप्ता, इंद्र का अभिषेक कुमार, कमला का अलका शर्मा, राखाल का श्रेयश, पारस का नीतीश कुमार व वनमाली का अभिनय मुन्ना कुमार राय ने निभाया।

■ कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति

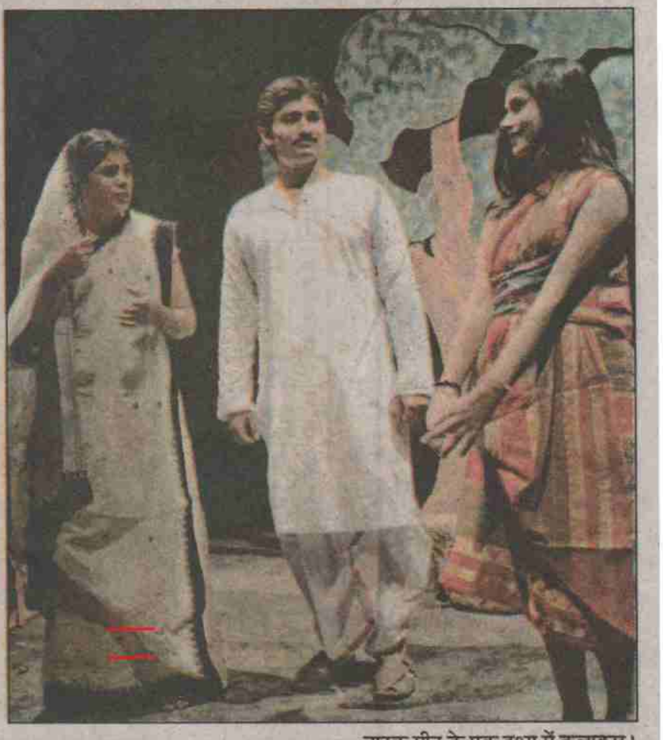

नाटक मीनू के एक दृश्य में कलाकार।

कविगुरु की 154वीं जयंती पर हुआ आयोजन

'बदनाम' ने दिया देश को एक रहने का संदेश

टैगोर की चर्चित रचनाओं में शामिल है 'बदनाम'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

एक तरफ पति के लिए कर्तव्य पथ पर सहयोगी बनने की मजबूरी और दूसरी तरफ देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन. इन दोनों के बीच में संतुलन बना कर भारतीय नारी के संकल्प शक्ति और चारित्रिक ऊंचाई की कहानी. रवींद्र परिषद् पटना के द्वारा रवींद्र भवन में आयोजित कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर के 154वें जयंती समारोह में उनकी कृति 'बदनाम' का बखूबी मंचन किया गया. इस प्रस्तुति का नाट्य रुपांतर गणेश प्रसाद सिन्हा और परिकल्पना व निर्देशन सुमन कुमार ने किया. इस मौके पर रवींद्र परिषद् के सचिव प्रोभास रॉय, बिहार संगीत अकादमी के उपाध्यक्ष प्रदीप्तो मुखर्जी, नीशित कुमार बोस, शंकर गुहा समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे.

नाटक बदनाम का दृश्य

दिखी भारतीय नारी की संकल्प शक्ति

कहानी के अनुसार क्रांतिकारी अनिल अपने जमानत के शर्तों का उल्लंघन कर के पुलिस के पहुंच से बाहर हो जाता है. उसे पकड़ने के लिए ब्रिटिश शासन का इंस्पेक्टर विजय चक्रवर्ती अपनी हर कोशिश करता है लेकिन अनिल उसके पकड़ में नहीं आता है. इंस्पेक्टर विजय को यह जानकारी मिलती है कि अनिल को किसी संभ्रांत महिला का वरदस्त प्राप्त है और उसी के द्वारा उसे सारी सूचनाएं मिल जाती हैं. इंस्पेक्टर विजय अपनी पत्नी सौदामिनी उर्फ सद्दू से कहता है कि वह उस महिला के बारे में जानकारी एकत्र करने में सहयोग करे तब सद्दू अपने पति से वादा करती है कि वह शिवालय में अनिल और उसके सहयोगी को गिरफ्तार करा देगी. तय समय पर इंस्पेक्टर शिवालय पहुंचता है और यह जानकर स्तब्ध रह जाता है कि अनिल को सहयोग करने वाली महिला कोई और नहीं बल्कि खुद उसकी पत्नी सद्दू है. यह जानते हुए भी कि वह समाज में बदनाम होगी, सौदामिनी देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए अपने पति के कर्तव्य पथ पर सहयोगी बनती है.

इस प्रस्तुति में सौदामिनी के रुप में उज्जवला गांगुली, इंस्पेक्टर विजय के रुप में चक्रपाणी पांडेय और अनिल के रुप में उदित कुमार ने तो वहीं मासी मां के रोल में सुनिता भारती के साथ अलग अलग रोल में उमाशंकर, नीरज कुमार, मुन्ना कुमार राय, मो.जइमुद्दीन समेत अन्य कलाकारों ने भी बखूबी अपने अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन किया.

रवींद्र संगीत के कार्यक्रम में झूम उठे दर्शक

- कालिदास रंगालय में हुआ आयोजन
- गायन और नृत्य का हुआ अनोखा संगम

पटना . रवींद्र जयंती के अवसर पर कालिदास रंगालय में 'पथ' विषय पर आधारित रवींद्र संगीत और नृत्य का अनुष्ठान किया गया. इसमें कई कलाकारों ने अपनी-अपनी प्रतिभा के द्वारा लोगों का मन मोह लिया. इसका आयोजन 'संचारी' की तरफ से किया गया. इस मौके पर 'कर्ण-कुंजी-संवाद' कविता पाठ का आयोजन हुआ. आलेख्य रचना डॉक्टर रात्रि राय और आलेख्य पाठ श्रुति सेनगुप्ता ने किया.

कालिदास रंगालय में रवींद्र संगीत पर नृत्य करते कलाकार.

गायन -नृत्य से झंकृत हुआ रंगालयः रवींद्र जयंती के अवसर पर आयोजित हुए इस आयोजन में गौतम राय चौधरी, सनातन मुखर्जी, शर्बरी राय, कस्तूरी दासगुप्ता, सुतपा सांजरा, सुलग्ना मुखर्जी और मैत्रेयी बनर्जी ने जहां गायन की प्रस्तुति दी वहीं नेहा बनर्जी, सृष्टि पॉल, अंबिका, नीलांजना बनर्जी, सोमा सरकार, रेनेसा दास, स्वास्तिका मंडल, देवोजित भट्टाचार्य और अर्कदीप बनर्जी ने नृत्य प्रस्तुत किया. इस दौरान तबले पर सुमन्तो दासगुप्ता और सिन्थेसाइजर पर शिवम ने साथ दिया. नृत्य की परिकल्पना तापसी चक्रवर्ती और सुतापा ने किया.

सिटी हैपनिंग

प्रभात खबर
www.prabhatkhabar.com

कालिदास रंगालय में हुआ नाटक 'दोषी कौन' का मंचन

शहर के चकाचौंध में भी लोगों को होता है पछतावा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शहर की रौनक सबको प्यारी लगती है. चाहे वह गांव का कोई गंवार हो या शहर में रह रहा अमीरजादा. इस रौनक के चकाचौंध में लोग आकर यहीं के बन जाते हैं. कई तो इतने चौंधिया जाते हैं कि उन्हें अपनी सीमा तक का पता नहीं रहता है. गांव छोड़ लोग शहर में तो आ जाते हैं, लेकिन वे यहां आकर रंगरेलियां भी मनाने लगते हैं.

इन रंगरेलियों के बीच उन्हें कुछ समय बाद पछतावा भी होता है. ऐसी ही एक कहानी को शनिवार को कालिदास रंगालय में दिखाया गया. वरिष्ठ रंगकर्मी, निर्देशक और कहानीकार अरुण कुमार सिन्हा द्वारा लिखित इस कहानी को नाटक 'दोषी कौन' के रूप में न सिर्फ दिखाया गया, बल्कि समाज की सच्चाई को भी प्रदर्शित किया गया. लोगों को संदेश भी दिया गया कि लोग अपने दायरे को कतई ना भूला करें. बिहार आर्ट थियेटर द्वारा मंचित इस नाटक का निर्देशन भी अरुण कुमार सिन्हा ने किया.

नाटक में हिस्सा लेते कलाकार.

यह थी कहानी

शारदा शहीद फौजी की एक विधवा है, जो गांव में खेती-बाड़ी संभाल कर अपनी अनाथ भतीजी (अपने भाई की बेटी) पुष्पा का पालन-पोषण करती है. वह अपने पुत्र को शहर के हॉस्टल में रख कर बेहतर शिक्षा प्रदान कर रही है, जो अपने गांव में काफी दिनों से नहीं आया है.

बीमार शारदा के इलाज के लिए, दवा लेने गयी पुष्पा का अपहरण हो जाता है. शारदा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बिरजू पुष्पा की तलाश करता रह जाता है, लेकिन वह नहीं मिलती है. इधर अपने बचपन के दोस्त जयमंगल के परामर्श पर बिरजू गांव की संपत्ति बेच कर शहर आ जाता है. गलत संगत के कारण बिरजू शराब और शबाब में डूब जाता है. एक दिन उसकी मुलाकात स्वरूपाबाई से होती है, तो वह उसकी सुंदरता के मोहपाश में बंध जाता है. रंगरेलियां और अंतरंगता बढ़ जाती है. तभी कुछ दिनों बाद उसे पता चलता है कि यह पुष्पा है, जो बचपन में खो गयी थी. इस बात को जानने के बाद वह स्वरूपाबाई आत्महत्या कर लेती है. उस बात के पश्चाताप के लिए बिरजू भी जहर की शीशी की तरफ बढ़ जाता है.

इन्होंने किया अभिनय

नाटक में पुष्पा और स्वरूपाबाई का किरदार उज्जवला गांगुली ने निभाया. बिरजू का किरदार अभिषेक ने और शारदा का किरदार सुनिता भारती ने निभाया. इनके अलावा अमृता कुमारी, रविभूषण शर्मा भट्ट, अभिषेक सिंह, विशाल तिवारी, उमेश कुमार, नंदलाल सिंह, दीपांकर शर्मा, एस कृष्णन (नायडू), प्रवीण कुमार ने भी अभिनय किया. इसके अलावा नेपथ्य में मंच परिकल्पना में प्रदीप गांगुली, प्रकाश संचालन में राज कुमार शर्मा, प्रकाश परिकल्पना में सुमन सौरभ और सुजीत कुमार शर्मा, ध्वनि प्रभाव में उपेन्द्र कुमार ने बेहतरीन सहयोग किया.

दोहरी मंच सज्जा से बढ़ गयी खूबसूरती

नाटक में गांव के परिवेश और शहर के परिवेश को दिखाया गया था. इसके लिए दो तरह की मंच सज्जा की गयी. पहले परदे के उठते ही सामने गांव का परिवेश था. उसके बाद दूसरे परदे के पीछे शहर के परिवेश को दिखाया गया था. नाटक में कहानी के अनुरूप ही मंच सज्जा को दिखाया गया था.

शनिवार को कालिदास रंगालय में 'दोषी कौन' नाटक का भावपूर्ण दृश्य। • हिन्दुस्तान

...और स्वरूपाबाई ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली

पटना | कार्यालय संवाददाता

मंचन

- बैट स्थापना दिवस समरोह में 'दोषी कौन?' नाटक का मंचन
- अरुण कुमार सिन्हा लिखित व निर्देशित नाटक का मंचन

एक और नया नाटक शनिवार को देखने को मिला। कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर के कलाकारों ने 'दोषी कौन' नाटक का मंचन किया। अरुण सिन्हा लिखित और निर्देशित इस नाटक में एक लड़की की जिंदगी की कहानी के जरिए जिस्मफरोशी व नारी शोषण पर सवाल उठाया गया। पूछा गया कि इसके लिए दोषी कौन? वह लड़की या समाज।

कहानी ही सब कुछ : नाटक की कहानी एक फौजी परिवार की थी। फौजी की विधवा शारदा गांव में रहती है। अपनी अनाथ भतीजी पुष्पा के साथ। और पुत्र बिरजू को पढ़ने के लिए शहर भेजती है। शारदा बीमार पड़ती है। पुष्पा दवा लाने के लिए जाती है। इस बीच उसका अपहरण हो जाता है। बिरजू गांव आता है, तब तक मां की मृत्यु हो जाती है और बहन भी नहीं मिलती है। दोस्त की सलाह पर खेत बेचता है। शहर में जाकर बसता है और रंगरेलियों में डूब जाता है। कोठेवाली बाई स्वरूपाबाई से अंतरंगता बढ़ती है और आखिर में पता चलता है कि स्वरूपा ही पुष्पा है। फिर क्या था, स्वरूपा लज्जित होकर जहर खा लेती है। बिरजू पश्चाताप में डूब जाता है। उज्ज्वला गांगुली (स्वरूपाबाई), अभिषेक (बिरजू), अमृता कुमारी (पुष्पा), सुनिता भारती (शारदा) आदि ने अभिनय किया।

Yakshini / Sunita Bharti (यक्षिणी / सुनिता भारती) Played Protagonist

Yakshini is first Hindi play on an Archeological Artifact "Didarganj Chauri-Bearer Female Figure"

जागरण सिटी पटना

www.jagran.com

'यक्षिणी' ने सुनाई संग्रहालय की कहानी

पटना संग्रहालय के शताब्दी वर्ष समारोह के अंतिम दिन आयोजित हुए कार्यक्रम, कलाकृतियों के साथ प्रतियोगिता आयोजित

पटना संग्रहालय के शताब्दी वर्ष पर आयोजित समारोह में नाटक का मंचन करते कलाकार • जागरण

ये थे कलाकार

बुलकनी : सुनीता भारती
जानकी : रितु राज
अकलू : चंदन कुमार
बहरुद्दीन : आर नरेंद्र
नरेंद्र : शुभम सिंह
प्रो. समादार : कुमुद रंजन
वाल्श : अंशुमन
डी बी स्पूनर : अभिनव कश्यप
देवी माधवी : सुनीता भारती
राजशिल्पी भद्रक : आमिर हक

मंच परे कलाकार

प्रकाश एवं ध्वनि : गुंजन कुमार
वस्त्र निर्माण : मोहम्मद सदरुद्दीन
मंच सामग्री : विषयेंद्र नारायण सिंह

यक्षिणी के उद्भव गाथा बताते कलाकार • जागरण

पटना संग्रहालय के 100 वर्ष पूरा होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के समापन दिवस पर दो सत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो द्वारा संग्रहालय की कलाकृतियों के ऊपर कला लेखन एवं पाठ प्रतियोगिता आयोजित हुई। दूसरे सत्र में स्कूल ऑफ थिएट्रिकल आर्ट, फेसेस और पटना संग्रहालय के द्वारा यक्षिणी नाटक का मंचन किया गया। प्रथम सत्र में छात्र-छात्राओं भाग लिया। इसके साथ ही पेंटिंग प्रतियोगिता भी हुई। जिसके बाद त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो की ओर से पुरस्कार वितरण किया गया। इस अवसर पर मधुबनी पेंटिंग की कलाकार उषा झा, लेखक ममता मेहरोत्रा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहीं। कलाकृतियों और पुरावशेषों के ऊपर अंजलि यादव, प्रियंका वर्मा, सुनीता कुमारी, प्रीति सेन, शिशिर कुमार, प्रीति मधुलिका ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया। इस दौरान यक्षिणी पर लिखी कविता पर शॉर्ट फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। साथ ही धुएं के सिग्नल से मोबाइल सिग्नल का सफर पर भी प्रजेंटेशन हुआ। अवसर पर उषा झा ने विरासत और कला के संगम पर बात की। ममता मेहरोत्रा ने भी कवियों की रचनात्मकता की प्रशंसा की।

लक्ष्मी की प्रतिमा मान कर होने लगी यक्षिणी की पूजा...

अरे...यहां तो सांप था...कहीं मेरे बच्चे को काट लेता तो मैं क्या करती...बुलकनी का ये संवाद पूरे परिसर में दर्शकों की उत्सुकता को बढ़ा देता है। मंच पर अंधेरा छा जाता है और कपड़े धोने वाले पत्थर के अगल-बगल खुदाई की जाती है। संवाद और प्रकाश संयोजन के सुगम संयोग ने यक्षिणी के उद्भव गाथा को कालजयी बना दिया। मौका था पटना संग्रहालय और फेसेस के द्वारा यक्षिणी नाटक के मंचन का। दो भागों में प्रस्तुत नाटक में यक्षिणी के मिलने से लेकर कलाकृति के म्यूजियम में रखे जाने की यात्रा दिखाई गई। नाटक में दीदारगंज के स्थानीय लोगों के द्वारा यक्षिणी की मूर्ति पर कपड़ा धोने को खूबसूरत ढंग से दिखाया गया। मंचन में यह भी दिखाया गया कि किस तरह 1917 में निकाली गई इस मूर्ति को लक्ष्मी की प्रतिमा मानकर पूजा-अर्चना की जाने लगी थी। प्रस्तुतिकरण को पटना यूनिवर्सिटी के छात्र नरेन्द्र और प्राध्यापक प्रो. समादार, मिस्टर वाल्श, गुलाम रसूल, डॉ. स्पूनर सहित सभी पात्र वास्तविकता की ओर ले जाते हैं। दूसरे भाग में यक्षिणी के मूर्तिकार और इसकी प्रेरणा के बारे में दिखाया गया है। यह भाग कल्पना के आधार पर यक्षिणी से संबंधित कई महत्वपूर्ण सवालों का तर्कपूर्ण उत्तर दे गया। माधवी और भद्रक के इर्द-गिर्द घूमती इस कहानी में सात्विक प्रेम कथा दिखाई गई।

पटना LIVE पटना

हिन्दुस्

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को हुई पेंटिंग प्रतियोगिता, यक्षिणी पर नाटक का हुआ मंचन

म्यूजियम की कलाकृतियों को कागजों पर उकेरा

पटना | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को म्यूजियम परिसर में बच्चों ने पेंटिंग के जरिए म्यूजियम का महत्व बताया। म्यूजियम की अद्भुत कलाकृतियों को पेंटिंग के जरिए कागजों पर उकेरा।

समारोह के तीसरे दिन बुधवार को म्यूजियम की कलाकृतियों के ऊपर कला लेखन, पाठ एवं पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। इसमें राजधानी के कई स्कूलों के बच्चे शामिल हुए। बच्चों ने पेंटिंग में पटना म्यूजियम के पुरावशेषों और चित्रों, दुर्लभ सिक्कों, पांडुलिपियों, पत्थर और खनिज, तोप और शीशा की कलाकृतियों को दर्शाया। इसमें म्यूजियम की खास वैशाली में लिच्छिवियों द्वारा भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद बनवाए गए प्राचीनतम मिट्टी के स्तूप से प्राप्त बुद्ध के दुर्लभ अस्थि अवशेष वाली कलश मंजूषा, काफी पुराने चीड़ के एक वृक्ष का जीवाश्म और चामर ग्राहिणी यक्षिणी (दीदारगंज-यक्षिणी) एक विश्व-विख्यात कलाकृति जिसे देखने के लिए विदेश से भी लोग आते हैं उसे पेंटिंग में दिखाया गया। त्रिनेत्र आर्ट स्टूडियो की ओर से विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

यक्षिणी के मिलने से म्यूजियम आने तक की कहानी : समापन समारोह के दूसरे सत्र में पटना म्यूजियम की शान यक्षिणी नाटक का मंचन किया गया। इसमें चामर ग्राहिणी यक्षिणी के मिलने से लेकर पटना संग्रहालय तक आने की कहानी प्रदर्शित की गई।

दो भागों में प्रदर्शित नाटक को दर्शकों ने खूब सराहा। पहले भाग में यक्षिणी कैसे मिली इसे दिखाया गया और दूसरा भाग मौर्य काल की पृष्ठभूमि पर है। चामर-धारिणी जैसे कालजयी कलाकृति का मूर्तिकार कौन था और इसकी प्रेरणा कौन थी। नाटक में कल्पना के आधार पर तर्क के साथ इसका जवाब दर्शकों को मिला। दो घंटे तक चलने वाले इस नाटक में बुलकनी का प्रदर्शन सवश्रेष्ठ रहा। बुलकनी का किरदार सुनीता भारती ने निभाया। इस नाटक के लेखक अरविंद कुमार और निर्देशक सुनिता भारती थी। मिथिलेश कुमार सिन्हा ने पुरोहित और अमात्य हर्षदेव के पात्र को जीवंत किया। चंदन कुमार ने बकलू ग्रामीण मजदूर और महानायक जयराम की भूमिका निभायी। उन दोनों को सर्वश्रेष्ठ कलाकार के खिताब से नवाजा गया। इस नाटक द हेरिटेज कंसोर्टियम पश्चिम पटेल नगर के संवेदक विभाष कुमार ने संस्था फेसेज को एक सुंदर प्रस्तुति के लिए 21 हजार रुपए का दान सुनीता भारती को प्रदान किया गया। भारतीय कला भवन वाराणसी के पूर्व निदेशक डॉ. डीपी शर्मा ने नाटक की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रस्तुति अपने जीवन काल में यक्षिणी के ऊपर नहीं देखी। इस मौके पर पुस्तक यक्षिणी का विमोचन हुआ। फेसेज यक्षिणी नाटक में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मिथिलेश कुमार सिन्हा एवं चंदन कुमार को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पटना म्यूजियम के शताब्दी समारोह के समापन पर बुधवार को चामर ग्राहिणी यक्षिणी के मिलने से लेकर पटना संग्रहालय तक आने की कहानी नाटक के जरिए प्रदर्शित की गई। • हिन्दुस्तान

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को किया पुरस्कृत

अंत में मंगलवार को आयोजित निबंध लेखन वाचन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसका चयन निर्णायक मंडल ने किया। मंडल में काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ चितरंजन प्रसाद सिन्हा, संग्रहालय के पूर्व निदेशक उमेश चंद्र द्विवेदी, पटना संग्रहालय के शोध सहायक शिव कुमार मिश्र, भैरव लाल दास शामिल थे। धन्यवाद शंकर सुमन ने किया।

हृदय रोगों [illegible]
करेंगे देश[illegible]

पटना | कार्यालय संवाददाता

हृदय की बीमारियां, कारण, उपचा[illegible] और बचाव विषय पर देश के लगभ[illegible] तीन सौ हृदय रोग विशेषज्ञ करेंगे। आ[illegible] और नौ अप्रैल को गांधी मैदान स्थित ए[illegible] होटल में हृदय रोग विशेषज्ञों क[illegible] सम्मेलन होगा।

पहले दिन सुबह 11 बजे वैज्ञानि[illegible] सत्र का उद्घाटन देश के चर्चित हृद[illegible] रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक सेठ करेंगे[illegible] विशेषज्ञ मुख्य रूप से देश में हर्ट अटै[illegible] की बढ़ती घटनाएं और मृत्यु दर [illegible] कैसे कम किया जाए इस पर मंथन करेंगे[illegible] बुधवार को गांधी मैदान स्थित ए[illegible] होटल में आयोजित प्रेसवार्ता [illegible] आयोजन समिति के चेयरमैन डा. आर[illegible] अग्रवाल, आईजीआईएमएस के हृद[illegible] रोग विभाग के हेड डॉ. बीपी सिंह, [illegible] एके झा, डॉ. यूसी शामल, डॉ. अरवि[illegible] कुमार, डॉ. एसएस चटर्जी, डॉ. बी[illegible] भारती, डॉ. अजय कुमार सिन्हा, [illegible] प्रमोद कुमार ने कहा कि इस[illegible]

मां के दर्शन के लि[illegible]

अथमलगोला। चैत्र नवरात्रि के नौवें [illegible] की देवी मां दुर्गा की आराधना कर [illegible] लिए पहुंचे। प्रखंड के सबनीमा, [illegible] साहेब कुटिया में दर्शन व पूजन के लि[illegible] दानापुर में शहर के श्रीश्री दक्षिणेश्वरी [illegible] मिश्र व बृज मोहन मिश्र ने हवन [illegible] गोला रोड और देवी स्थान उसरी [illegible]

Shershah / Dr. Chaturbhuj (शेरशाह / डॉ. चतुर्भुज)

WEDNESDAY, PATNA, 01.03.2017 • 2

ACTIVITY

मंच पर जीवंत हुई शेरशाह की बहादुरी

कलाकार : आमिर हक, सरबिंद कुमार, रास राज, पारस झा, ऋतु राज, सुनीता भारती, माला सिन्हा, मानसी श्रीवास्तव, आर नरेंद्र, सर्फुद्दीन, धर्मेश मेहता आदि।

पटना • डीबी स्टार

अपनी बुद्धिमता और बहादुरी से ताकतवर मुगल सल्तनत को खत्म कर अपनी बादशाहत कायम करने वाले बिहार के सपूत शेरशाह सूरी की कहानी दिखी मंगलवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक शेरशाह में। प्रसिद्ध रंगकर्मी डॉ. चतुर्भुज द्वारा रचित इस ऐतिहासिक नाटक में शेरशाह सूरी की जिंदगी के कई पहलुओं से दर्शकों को रूबरू कराया गया। रणधीर सिंह निर्देशित इस नाटक का मंचन माध्यम फाउंडेशन की ओर से किया गया था।

नाटक में इतिहास के इस महान नायक के व्यक्तित्व को दिखाया गया। नाटक में दिखा कि शेरशाह सूरी का नाम पहले फरीद खां था और वह बिहार के सासाराम का रहने वाला था। शेर को एक ही वार में मार गिराने के कारण उसका नाम शेर खां पड़ा। अपनी बुद्धिमता और बहादुरी से भारत का सम्राट ही नहीं बल्कि इतिहास का प्रसिद्ध व्यक्ति बना। पांच साल के अपने शासनकाल में ही उसने लोकहित में इतने काम किए जिसे आज भी याद किया जाता है। ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण उसकी दूरदर्शिता को दिखाता है।

यह बहादुर शासक महिलाओं की भी बेहद इज्जत करता था। नाटक में दिखाया गया कि युद्ध में हार चुके हुमायूं की बेगम मलिका मुअज्जमा को सम्मान के साथ अपने शौहर से मिलवाया। कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में अपने द्वारा छोड़े गए हथगोले से वह बुरी तरह से जल गया जो बाद में उसकी मौत का कारण बना। यह महान शासक अपनी इच्छा के मुताबिक मृत्यु के बाद अपने बनवाए सासाराम के मकबरे में दफन किया गया।

Parinda Ud Gaya / Dinanath Sahni (परिंदा उड़ गया / दीनानाथ साहनी)

नाट्य प्रस्तुतिकरण का नया विधान

'परिंदा उड़ गया' से उठा 'मास्टर-साहेब' से पर्दा गिरा

(आज समाचार सेवा)

पटना। कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में आर. पी. तरुण की स्मृति में तीन दिवसीय नाट्योत्सव के दूसरे दिन डॉ. दीनानाथ साहनी की तीन कहानियां मंच पर साकार हुईं।

मंचन के जरिये 'परिंदा उड़ गया', 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर-साहेब' की प्रस्तुति ऐसी रहीं कि तीनों ही नाट्य प्रस्तुतियां एकाकार हो गयीं। इसमें 'परिंदा उड़ गया' को आधार में रख कर, शेष दो कहानियां 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर-साहेब' को प्रस्तुत किया गया। कला जागरण की इस प्रस्तुति में पहली कहानी के कलाकार ही सूत्रधार की भूमिका निभाते हैं। कहानी के नाट्य प्रस्तुतिकरण का यह नया विधान है, जिसकी शुरूआत जाने-माने निर्देशक सुमन कुमार ने 'टुकड़ों-टुकड़ों में औरत' से शुरू किया है। इसे दर्शकों एवं साहित्य-प्रेमियों ने काफी सराहा है। आधार नाटक 'परिंदा उड़ गया' एक भाव प्रधान प्रस्तुति है। इसमें रंगमंच के कालाकारों की अपनी जीवंत मित्र मंडली के बिखराव के दर्द को चित्रित किया गया है। एक समय होता है, जब दोस्तों की एक अपनी अलग दुनिया होती है जिसमें वे चहकते, फुदकते और अपनी-अपनी भावनाओं को आपस में बांटते हैं। ऐसा लगता है, यह दुनिया कभी खत्म न होने के लिए है। लेकिन, जिंदगी की भाग दौड़ में यह प्यारा संसार बिखर जाता है और जिंदगी उस खाली पिंजड़े की तरह रह जाती है, जिससे निकल कर परिंदा उड़ गया हो।

'विद्रोही स्त्री', वर्तमान समय में नारी शोषण और इसके प्रतिक्रिया स्वरूप नारी-शक्ति के पुनर्जागरण का एक सुंदर उदाहरण है। शारदा अपनी स्थिति से समझौता कर लेती है। लेकिन, विद्रोह का छोटा सा स्वर उसका पति सह नहीं पाता और उसकी हत्या कर देता है। उसके पति रघुनाथ की रखैल कमला यह सब देखती है और बड़ी बहादुरी से उसका प्रतिकार करती है। कमला कहती है कि 'मुझे ऐसा सधवा नहीं बनना कि अत्याचार झेलो और मर जाओ। दुनिया में मेरे लिए दूसरे भी मर्द हैं।' नारी जाति के अंदर दमन के खिलाफ फूट पड़े ज्वालामुखी का वह लावा है, जो नारी को निकृष्ट समझने वाले अत्याचारियों के अहं को खाक करने के लिए काफी है।

तीसरी कहानी 'मास्टर-साहेब', भ्रष्ट शिक्षकों के कारण विद्यालयों की नष्ट होती पवित्रता और हमारी नयी पौध पर उसके कुप्रभाव को दर्शाता है। भरत सर एक ऐसे शिक्षक हैं, जो बच्चों को तो चरित्र की उज्जवलता का पाठ पढ़ाते हैं, परंतु उनका अपना ही चरित्र इतना गिरा हुआ है कि जब इसका रहस्योद्घाटन होता है, तो गुरुभक्त और सबसे सरल मासूम बच्चे के मुंह से भी उनके लिए गाली निकल जाती है। मंच पर शुभम सिंह, डॉ. शंकर सुमन, सुनीता भारती, नितीश कुमार, आमिर हक, राहुल उपाध्याय, रूबी खातून, अरविंद कुमार, आराध्या सिन्हा, मिथिलेश सिन्हा, अनंत, पुष्कर एवं अमित ने पात्रों को जीवंतता के साथ जिया। गुंजन कुमार का संगीत प्रभावपूर्ण रहा। नाट्य रूपांतरण अरविंद कुमार ने किया था।

सदस्यों ने किया शपथ ग्रहण

कुमार सिंह, विमल चौधरी सहित कई गणमान्य समाजसेवी उपस्थित थे।

खचाखच भरे संघ भवन में नवनिर्वाचित अध्यक्ष ब्रहानंद सिंह, उपाध्यक्ष रणविजय कुमार व अशोक कुमार, महासचिव ई. सुनील कुमार

एनपीसीसी में विश्वकर्मा पूजा का भव्य आयोजन

पटना। भगवान विश्वकर्मा की पूजा के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी एनपीसीसी (भारत सरकार का उपक्रम), पटना

सरोज दास ने

पटना (आससे)। बहुदेशीय सांस्कृतिक परिसर भारतीय नृत्य कला मंदिर में भारतीय सांस्कृतिक, संबंध परिषद एवं कला संस्कृति एवं युवा

आइसीसीआर

Vijay Vibhuti / Dr. Chhotu Narayan Singh (विजय विभूति / डा. छोटू नारायण सिंह)

हिंसा से कभी दिल नहीं जीत सकते

DRAMA

डीबी स्टार। » पटना

हिंसा न कभी किसी घटना का समाधान हो सकती है और न ही हिंसा से कभी किसी का का दिल जीता जा सकता है। मगध सम्राट अशोक जो मानता था कि राजाओं के लिए सत्य और अहिंसा अर्थहीन शब्द है उसे भी अंत में अहिंसा की शरण में आना पड़ा। यह बात कह गया मंगलवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक विजय विभूति। बिहार नाट्यकला प्रशिक्षणालय, पटना की प्रस्तुति इस नाटक के निर्देशक थे उपेंद्र कुमार। नाटक में अहिंसा के महत्व को सम्राट अशोक के प्रसंग में दिखाया गया।

यह थी कहानी

नाटक में दिखाया गया कि धर्मांतरण के पूर्व मगध सम्राट अशोक एक क्रूर और अति-महत्वाकांक्षी शासक था। वह मानता था कि सम्राट कभी अहिंसक नहीं हो सकता है। एक बार सम्राट अशोक बुद्ध का संदेश लेकर आने वाले भिक्षु का उपहास करते हैं, निराश भिक्षु अशोक के दरबार में यह कह कर चला जाता है कि - समय आने पर आप स्वयं अहिंसा के महत्व को समझेंगे।

कुछ दिनों बाद सम्राट अशोक अपनी असीमित युद्ध लिप्सा के अधीन हो कालिंग पर चढ़ाई करते हैं। युद्ध में लाखों जाने जाती है जिसे देखकर अशोक का क्रूर हृदय भी द्रवित हो उठता है। वह युद्ध समाप्ति की घोषणा करते हैं और इस भीषण रक्त-पात के लिए स्वयं को दोषी मानते हुए पश्चाताप करते हैं। तब उन्हें बौद्ध भिक्षु की बात याद आती है जिसे उन्होंने दरबार में उचित सम्मान नहीं दिया था। उनका हृदय परिवर्तित हो जाता है और वह बौद्ध धर्म की शरण में जाने की घोषणा करते हैं। वह मानते हैं कि धरती और संपति नहीं बल्कि उनके हृदय का परिवर्तन ही कालिंग - विजय की सच्ची विभूति है।

निर्देशक और प्रकाश परिकल्पना	उपेंद्र कुमार
नाट्यकार	डॉ छोटू नारायण सिंह
सहायक निर्देशक	सुनीता भारती
मंच परिकल्पना	प्रदीप गांगुली
रूप सज्जा	चंदना घोष
प्रस्तुति नियंत्रक	अशोक घोष
प्रस्तुति प्रभारी	अरूण कुमार सिन्हा
संगीत संयोजन	अरविंद कुमार सिंह
प्रकाश संचालन	राजकुमार शर्मा

यह थे कलाकार

युवराज कुमार, दीपक मिश्रा, रंजन कुमार, सोनू शंकर, भावना शर्मा, वैभव विशाल, रणविजय सिंह, चक्रपाणि पाण्डेय, प्रवीण कुमार, मुन्ना राय और सुनीता भारती।

इसी जन्म में मिलती हर कुकर्म की सजा

थियेटर

त्रिदिवसीय विश्व रंगमंच दिवस नाट्योत्सव में नाटक 'दो हिचकियां' की प्रस्तुति

कहते हैं कि अपने कर्मों की सजा इंसान को इसी जीवन में भुगतनी पड़ती है। आदमी अपने कुकर्म दुनिया से भले ही छिपा ले, किंतु वह उनके परिणाम से नहीं बच सकता। यह देखने को मिला नाटक 'दो हिचकियां' में। शुक्रवार की शाम 'बिहार आर्ट थिएटर' द्वारा 'विश्व रंगमंच दिवस' के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय नाट्योत्सव के पहले दिन इस नाटक की प्रस्तुति कालिदास रंगालय में की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यसभा सांसद तथा बिहार आर्ट थिएटर के संरक्षक रवींद्र किशोर सिन्हा ने किया। मौके पर कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव आनंद किशोर भी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. छोटू नारायण सिंह द्वारा लिखित इस नाटक का निर्देशन अरूण कुमार सिन्हा ने किया।

लालच ने छीना सब कुछ

नाटक की कहानी एक जमींदार के इर्द-गिर्द घूमती है। जमींदार उदित राय दूसरे की संपत्ति तक हड़प लेता है। अपनी सगी भतीजी को धन के लालच में जहर मिला दूध पीने के लिए दे देता है। किंतु उसके बेटे को इस बात की खबर हो जाती है और जहर मिला दूध वह खुद पी जाता है। इस तरह जमींदार लालच के कारण अपने इकलौते बेटे को खो देता है। नाटक के माध्यम से समाज को एक सार्थक संदेश देने का भी प्रयत्न किया गया है। साथ ही नाटक परिवार के विविध रूपों से भी दर्शकों को अवगत कराता है।

अभिनय व निर्देशन

नाटक में सभी कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय किया। अपने चरित्र के अनुकूल संवाद-अदायगी, वेश-भूषा, चाल-ढ़ाल आदि के कारण नाटक का स्वरूप प्रखर होकर दर्शकों के सामने आया। मंच-प्रयोग, प्रकाश का व्यवस्थित प्रयोग तथा भावानुकूल संगीत से निर्देशन में की गई मेहनत भी काफी स्पष्ट दिखी। जमींदार की भूमिका में अरूण कुमार सिन्हा ने अपने अभिनय से सबका दिल जीत लिया। इनके अलावा अनिता कुमारी वर्मा, उमंग, अभिषेक रंजन, उज्जवला गांगुली, सुदीप कुमार, कुणाल कौशल तथा सतीश कुमार ने भी बेहतरीन अभिनय कौशल का परिचय दिया।

कालिदास रंगालय में 'दो हिचकियां' नाटक की प्रस्तुति में कलाकार।

नेपथ्य सहयोग

नाटक को नेपथ्य से भी भरपूर सहयोग मिला। प्रदीप गांगुली की मंच परिकल्पना, सुमन सौरभ की प्रकाश परिकल्पना, उपेंद्र कुमार के संगीत तथा सुनील कुमार की रूप सज्जा ने सबको प्रभावित किया। सुजीत कुमार और सुजीत कुमार वर्मा निर्देशन सहयोगी तथा अरविंद कुमार और सुनीता भारती प्रस्तुति सहयोगी थे। कुमार अनुपम प्रस्तुति प्रभारी थे। अशोक घोष, गुप्तेश्वर कुमार, राज कुमार शर्मा, हीरा मिस्त्री, बीरबल, संजय, सफुद्दीन तथा राजेश अन्य नेपथ्य सहयोगी थे। इस मौके पर डॉ. शंकर प्रसाद, सुमन कुमार आदि की उपस्थिति प्रमुख थी।

पटना, 23 फरवरी 2016 www.jagran.com

चल

कालिदास रंगालय में 'तीसरी कसम' नाटक का मंचन करते कलाकार।

दिल टूटा तो हीरामन ने खाई ‘तीसरी कसम’

कालिदास रंगालय में सोमवार को फणीश्वर नाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी 'मारे गए गुलफाम' उर्फ 'तीसरी कसम' के नाट्य रूपांतरण कर मंचन किया गया। कहानी गाड़ीवान हीरामन और नर्तकी हीराबाई के साथ चलती है। हीराबाई को अपनी गाड़ी पर बिठाकर सोनपुर मेला ले जाता है। उसे हीराबाई से प्रेम हो जाता है, लेकिन हीराबाई की अपनी मजबूरी है। वह दूसरी थियेटर में चली जाती है। हीरामन का दिल टूट जाता है। नाटक का मंचन माध्यम फाउंडेशन ने किया। निर्देशन धर्मेश मेहता ने किया।

यह थी नाटक की कहानी

हीरामन एक गाड़ीवान है। गाड़ी चलाने के दौरान दो ऐसी घटनाएं होती हैं कि हीरामन चोरबाजार का माल नहीं लादने और बांस नहीं लादने की कसम खाई। एक दिन हीरामन को नौटंकी में काम करनेवाली हीराबाई मिलती है। उसे सोनपुर मेला में जाना होता है। रास्ते में दोनों की बात होती है। दोनों एक बीच प्यार का रिश्ता पनपता है। हीरामन उसे चाहने लगता है। हीराबाई उसे नौटंकी का पास हीरामन को देती है। कुछ दिन बाद हीरामन को पता चलता है कि हीराबाई किसी और मेले के लिए जा रही है। इससे उसका दिल टूट जाता है। हीरामन, हीराबाई को खोज में स्टेशन जाता है। स्टेशन पहुंचते ही हीराबाई बताती है कि उसकी हीराबाई को दूसरे सौदागर ने खरीद लिया है। यह सुनते ही हीरामन का दिल टूट जाता है। हीरामन तीसरी कसम खाता है कि अब किसी नौटंकी वाली को गाड़ी में नहीं बैठाएगा।

ये रहे कलाकार

हीरामन : संजय सिंह
हीराबाई : यूरेका
दारोगा : कुमार विक्की
लाल मोहर : कृष्णा कुमार
लहसनवा : आनंद कुमार
सिपाही : रमण रंजन
ग्रामीण : कुणाल सिकंद, राकेश मेहता

नेपथ्य के कलाकार

प्रकाश व्यवस्था : उपेंद्र कुमार
वेश-भूषा : सुनीता भारती
रूप-सज्जा : अशोक घोष
पार्श्व स्वर : चित्रा श्रीवास्तव
मंच प्रभारी : सरविन्द कुमार

Kaumudi Mahotsav/ Dr. Ram Kumar Verma (कौमुदी महोत्सव / डा० रामकुमार वर्मा)

प्यार में ह्दय का व्यापार नहीं समर्पण होना चाहिए

कालिदास रंगालय में नाटक के मंचन का एक दृश्य। इस दौरान बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद थे।

DRAMA

डीबी स्टार » पटना

प्यार हृदय का व्यापार नहीं समर्पण होता है। सच्ची नारी मोहित नहीं होना चाहती, वह तो आत्मसमर्पण करना चाहती है और जो नारी मोहित होती है, वह अपनी रूह का व्यापार करती है, हृदय का समर्पण नहीं।

प्राचीन पाटलिपुत्र शहर या कुसुमपुर की राज नर्तकी अलका के इन संवादों से कालिदास रंगालय का मंच सोमवार की शाम गूंज रहा था। यह मौका था बिहार आर्ट थियेटर की ओर से मंचित नाटक कौमुदी महोत्सव का, डॉ रामकुमार वर्मा लिखित इस नाटक का निर्देशन किया था राजू कुमार ने। नाटक के माध्यम से निर्देशक ने मनुष्य के दोहरे चरित्र को दिखाने का प्रयास किया। नाटक से पटना के अतीत की एक रोमांचक झांकी दिखाई गई।

नाटक की कहानी मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के समकालीन है। इसमें दिखाया गया कि आचार्य चाणक्य की सहायता से चंद्रगुप्त मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पर अधिकार कर संपूर्ण मगध साम्राज्य का अधिपति बन जाता है। वह चाणक्य

लेखक	डॉ रामकुमार वर्मा
निर्देशक	राजू कुमार
सहायक निर्देशक	मारिया परवीन
मंच परिकल्पना	विष्णुदेव कुमार विशु
प्रकाश	प्रदीप गांगुली और राजकुमार शर्मा
रूप सज्जा	अशोक घोष और उपेंद्र
संगीत	अरविंद कुमार और आशीष कुमार
परिधान	सुनीता भारती और सुजीत कुमार

कलाकार धीरज कुमार, इरफान अहमद, राजू कुमार,मारिया प्रवीण, अमरदीप कुमार, डॉ शंकर सुमन।

सैनिक वैभव, विशाल, उमेश पासवान, अजीत कुमार और मनीष कुमार

नृत्य आयुषी, शिल्पी, कृतिका गुप्ता, मोनिका कुमारी, खुशबू कुमारी और पूजा कुमारी।

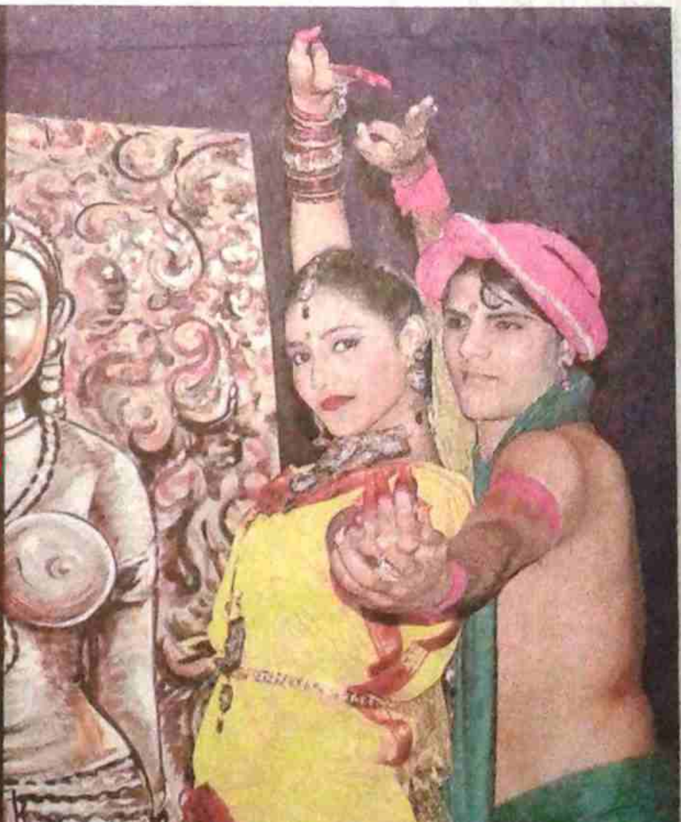

Cleanliness Campaign (स्वच्छता अभियान) Street Play in Schools

स्वच्छता के प्रति नुक्कड़ नाटक से किया अवेयर

पटना. माध्यम फाउंडेशन द्वारा शनिवार को मुसलिम हाइस्कूल में स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान पर आधारित कार्यशाला, वार्तालाप के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया. इस मौके पर विवेक कुमार द्वारा लिखित व धर्मेश मेहता द्वारा निर्देशित नुक्कड़ नाटक 'मेरा आंगन मेरा देश' का मंचन किया गया. नाटक में बच्चों को साफ-सफाई से रहने एवं अपने आस-पास और सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया गया. नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों में सुनीता भारती, गुंजन कुमार, मनोज कुमार, चित्रा श्रीवास्तव, सौरभ कुमार, कृष्णा कुमार, मनव्वर आलम, विक्की कुमार, विभा सिन्हा आदि मौजूद थे. कार्यक्रम में डा संजय कुमार, अनवारूल हसन, काजमी, डा रविंद्र कुमार चंद्र समेत कई लोग मौजूद थे.

Clean Patna Mission 1000 Ton (स्वच्छता पटना मिशन १००० टन)

नाटक से जागरूकता

लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करने के लिए शुक्रवार को मौर्य लोक परिसर में नुक्कड़ नाटक आयोजित किया गया।

Clean Patna Mission 1000 Ton (स्वच्छता पटना मिशन १००० टन)

सफाई का 'रंग'

कंकडबाग मलाही पकड़ी में सफाई के बाद कलाकारों ने नुक्कड़ नाटक कर लोगों को किया जागरूक।

…साथ विधायक व पार्षद के साथ स्थानीय लोगों ने ली सफाई का शपथ।

"शहर के नागरिक सबसे पहले अपने घर के बच्चों को स्वच्छता का महत्व बताएं। सफाई को आदत बनाना होगा। दैनिक जागरण के इस अभियान को वरिष्ठ नागरिक पूरा समर्थन दे रहे हैं। ये पहल शानदार है।

– श्याम जी सहाय, अध्यक्ष, बागबान क्लब

"अब हर शनिवार व रविवार को यहां स्वच्छता अभियान चलेगा। उम्मीद है कि स्थानीय लोग इसमें साथ देंगे। आम लोगों के सहयोग से पटना स्वच्छता के मामले में आदर्श शहर बनेगा।

– दीपक चौरसिया, वार्ड पार्षद

मौर्या लोक परिसर में दैनिक जागरण के 'मिशन 1000 टन' के तहत कलाकारों ने नुक्कड़ नाटक कर लोगों को किया जागरूक।